



CAZRI News

काजरी समाचार



खण्ड 12 अंक 1, जनवरी - मार्च 2022

Vol. 12 No. 1, January - March 2022

निदेशक की कलम से...



Director's pen...



रेत और धूल भरी आँधी विश्व के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में होने वाली मौसम संबंधी सामान्य घटनाएं हैं, जो प्रायः तूफान या चक्रवात से संबद्ध वायु के प्रबल दबाव का क्षेत्र बनने के कारण होती हैं। इसके प्रभाव के कारण बिना ढकी शुष्क सतही मृदा से बड़ी मात्रा में रेत और धूल वातावरण में स्रावित होती है। कणों के आकार के आधार पर, रेत और धूल के बादल कुछ घंटों से लेकर कई दिनों तक वातावरण में रह सकते हैं। प्राकृतिक कारणों के अलावा, वैश्विक धूल उत्सर्जन का कम से कम 25 प्रतिशत अंश मानव गतिविधियों

से उत्पन्न होता है और पृथ्वी के वायुमंडल की सबसे निचली परत में 40 प्रतिशत एरोसोल में पृथ्वी की सतह के धूल के कणों का योगदान होता है। हमारे देश में रेत और धूल भरी आँधी की सबसे ताजा घटना उत्तरी भारत में 2 से 3 मई 2018 तक आई धूल और रेत की आँधी है। उच्च-गति वाली धूल भरी आँधी ने राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों को प्रभावित किया, जिससे कुछ दिनों के लिए न्यून दृश्यता उत्पन्न हुई और आकस्मिक दुर्घटनाएं बढ़ी। रेत और धूल भरी आँधी की घटनाएं हमारे मरुस्थलीय क्षेत्र के जानी पहचानी विशेषताएं हैं, जहाँ इन घटनाओं को वायु द्वारा मृदा के कटाव से प्रेरित मरुस्थलीकरण के एक प्रबल भौतिक कारक के रूप में देखा जाता है। भूमि क्षरण, सूखा और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से रेत और धूल भरी आँधी की घटनाएं बढ़ रही हैं। रेत और धूल भरी आँधी के उद्गम या स्रोत क्षेत्रों और वहाँ से दूर के क्षेत्रों दोनों में पर्यावरण, मानव स्वास्थ्य, कृषि, आपूर्ति श्रृंखला और बुनियादी ढाँचे पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हर वर्ष, रेत और धूल भरी आँधी के कारण सीधे रूप से प्रभावित क्षेत्रों में लगभग 13 बिलियन डॉलर का नुकसान होता है। इसके प्रतिकूल प्रभावों को ध्यान में रखते हुए यूएनसीसीडी के सदस्य देशों ने मई 2022 में सीओपी-15 के तहत रेत और धूल भरी आँधियों के बारे में विस्तृत विवरण तैयार किया है। यह विविध स्रोतों से प्राप्त जानकारी और मार्गदर्शन का संकलन है, जो रेत और धूल भरी आँधी से उत्पन्न जोखिमों का आकलन कर इनका समाधान और मुकाबला करने के लिए योजना बनाने में मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस प्रयास में, रेत और धूल भरी आँधी की चुनौतियों से निबटने के लिए जानकारी केंद्र बनाने, पूर्व चेतावनी प्रणाली को विकसित करने और एक साथ काम करने की विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए यूएनसीसीडी 19 सदस्यों जैसे सीबीडी, ईएससीएपी, यूएनडीपी, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि के गठबंधन में काम कर रहा है।



Sand and dust storms (SDS) are common meteorological phenomenon in arid and semi-arid regions of the world usually caused by thunderstorms or strong wind pressure gradients associated with cyclones. As an impact, a large amount of sand and dust are released from bare and dry surface soils into the atmosphere. Depending on their size, the cloud of particles can suspend between a few hours to several days in the atmosphere.

Apart from natural reasons, at least 25% of global dust emissions originate from human activities and 40% of aerosols in the lowest layer of earth atmosphere are contributed from dust particles of the earth's surface. The dust and sand storm that occurred in north India from 2nd to 3rd May of 2018 is the most recent phenomena of SDS in our country. The high-velocity dust storms affected Rajasthan and Uttar Pradesh states, caused casualty and created poor visibility for couple of days. Incidences of SDS are familiar features in our desert region, where it is considered a potent physical factor of wind erosion driven desertification. The phenomena of SDS are increasing as an impact of land degradation, drought and climate change. Both the origin or source areas of SDS and the distant areas bear the adverse impact on environment, human health, agriculture, supply chain and infrastructure. Every year, about \$13 billion are lost due to sand and dust storms in the areas directly affected. Considering its adverse impacts, member countries of UNCCD at CoP-15 in May 2022 have formed a compendium of SDS. The Compendium brings together information and guidance from a wide range of sources and provides guidance on how to assess and address the risks posed by sand and dust storms and plan actions to combat them. In this effort, UNCCD is working in a coalition of 19 Members like CBD, ESCAP, UNDP, WHO etc. to build the knowledge pool, develop early warning systems and provide expertise to work together to solve the challenges of SDS.

ओम प्रकाश यादव

O.P. Yadav



शोध गतिविधियाँ

ग्वार के आशाजनक आनुवंशिक स्टॉक की पहचान: खरीफ 2015 के दौरान तीन आकारिकी रूप से भिन्न जीनप्रारूपों यथा एचजी-2-20 शाखित एवं रोमिल किस्म, सीएजेडजी-15-6 शाखित एवं अरोमिल तथा सीएजेडजी-15-3 एकल तना, अरोमिल एवं प्रत्येक गांठ पर नियमित फलनयुक्त के बीजों को गामा किरणों की श्रेणीबद्ध खुराक (0-1600 ग्रे) के साथ उपचारित किया गया। खरीफ 2016 के दौरान दृश्य अवलोकन के आधार पर लगभग 2000 एम₂ पौधों का चयन किया, जिनका मूल्यांकन करने के पश्चात् कुछ विशिष्ट उत्परिवर्तियों का ग्वार के आनुवंशिक सुधार के लिए चयन किया गया। चार मौसमों (वर्ष 2018 से 2021) के मूल्यांकन आंकड़ों के आधार पर निम्न तीन लक्षण-विशिष्ट आनुवंशिक स्टॉक की पहचान की गई।

सीएजेडजी-109: यह ग्वार का मोटे बीज वाला उत्परिवर्ती है जोकि सीएजेडजी 15-6 से चुना गया है तथा जिसे वंशानुगत अनुरक्षित रखा गया। इसमें 10 से.मी. से अधिक लंबी मांसल फली के साथ 45 ग्राम से अधिक परीक्षण वजन दर्ज किया गया। इस उत्परिवर्ती की पत्तियाँ, तना एवं फली की सतह अरोमिल और पुष्प गुलाबी रंग के होते हैं। यह बीज के आकार में सुधार और अंततः भ्रूणपोष (ग्लैक्टोमैनन) की मात्रा के लिए फायदेमंद हो सकता है।

सीएजेडजी-110: यह ग्वार का एक बहुत पतले तने वाला उत्परिवर्ती है, जिसका जीनप्रारूप सीएजेडजी 15-3 से चयन किया गया है, यह अशाखित, नियमित फलन तथा इसका सतही अंतराल 10 से.मी. से अधिक है। यह ग्वार प्रजनन कार्यक्रम में यान्त्रिक कटाई उपयोग के लिए महत्वपूर्ण होगा।

सीएजेडजी-20-17: यह ग्वार का एक शीघ्र-परिपक्व (80 दिन) होने वाला जीनप्रारूप है, जो आरजीसी-936 और सीएजेडजी-15-5-8 के संकर से विकसित किया गया है। यह गर्म शुष्क जलवायु में ग्वार की अन्य 90 दिनों से अधिक की परिपक्वता अवधि वाली लोकप्रिय

Research Activities

Identification of Promising Genetic Stocks of Clusterbean (*Cyamopsis tetragonoloba*): The seeds of three morphologically distinct genotypes namely, HG-2-20 a branched and hispid released variety, CAZG-15-6 a branched glabrous and CAZG 15-3 a single stem hispid having regular bearing (on each node) were treated with graded doses of gamma rays (0-1600 Gray) during kharif 2015. Almost 2000 M₂ plants were selected on the basis of visual observation during kharif 2016, which were evaluated and some of the distinct mutants were selected for utilization in genetic improvement of clusterbean. Based on the four seasons' (year 2018 to 2021) evaluation data, three trait-specific genetic stocks have been identified.

CAZG-109: It is a bold seeded mutant of clusterbean, which is selected from CAZG 15-6 and maintained over generations. It recorded more than 45 g test weight with long fleshy pod of more than 10 cm. The leaves, stem and pod surface of this mutant is glabrous and flowered with pink colour. It may be rewarding for seed size improvement and ultimately for endosperm (glactomannan) content.

CAZG-110: It is a very thin stem mutant of clusterbean identified from CAZG 15-3 (a regular bearing unbranched genotype) with ground clearance of more than 10 cm. It will be important for utilization in breeding program suitable for mechanical harvesting.

CAZG-20-17: It is an early-maturing (80 days) genotype of clusterbean, which is developed from a cross of RGC-936 and CAZG-15-5-8. It is beneficial under the hot arid climate over the other popular clusterbean varieties (e.g. HG-2-20, RGC-

चार मौसमों में ग्वार के आशाजनक आनुवंशिक स्टॉक की फली और बीज विशेषताओं का औसत मान

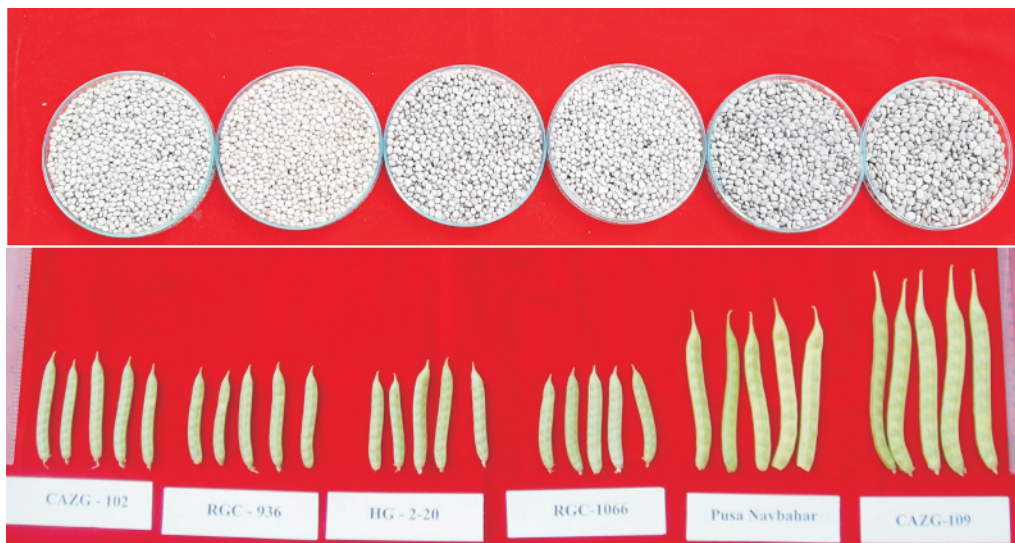
Average values of pod and seed characteristics of promising genetic stocks of clusterbean over 4 seasons

Genetic stock	Pod length (cm)	Pod width (mm)	Seeds per pod	Test weight (g)
CAZG-102	6.3	7.6	8.6	28.8
RGC-936	5.9	7.9	7.4	32.1
HG-2-20	6.1	7.4	7.6	36.7
RGC-1066	6.1	8.3	8.0	33.8
Pusa navbahar	9.9	9.5	9.0	37.4
CAZG-109	12.3	10.9	9.6	46.8

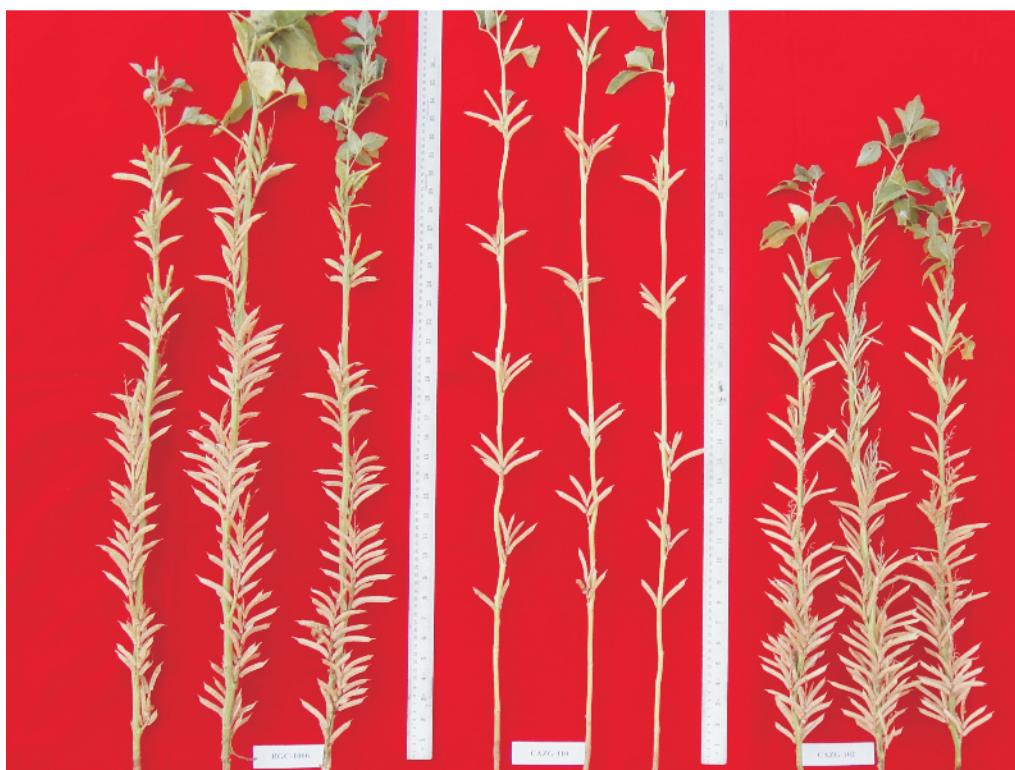
वर्ष 2021 के दौरान मानक किस्मों के साथ सीएजेडजी-20-17 की परिपक्वता अवधि की तुलना

Comparison of maturity duration of CAZG-20-17 with check varieties during 2021

Entry	Days to maturity				
	Jodhpur		Jaisalmer	Bikaner	Mean
	Summer	Kharif			
CAZG-20-17	76.7	78.7	80.0	80.7	79.0
HG-2-20 (Ch.)	101.3	94.9	90.3	91.3	94.5
RGC-1033 (Ch.)	98.9	93.7	89.9	91.6	93.5
RGC-1066 (Ch.)	102.7	95.3	90.4	92.9	95.3



मानक किस्मों के साथ ग्वार आनुवंशिक स्टॉक सीएजेडजी-109 के फली और बीजों की तुलना
A comparison of pods and seeds of clusterbean genetic stock CAZG-109 with check varieties



ग्वार के आनुवंशिक स्टॉक सीएजेडजी-110 (मध्य) के सतही अंतराल का तुलनात्मक दृश्य
A comparative view of ground clearance of clusterbean genetic stock CAZG-110 (middle)

किस्मों (जैसे एचजी-2-20, आरजीसी-1033, आरजीसी-936 और आरजीसी-1066) से अधिक फायदेमंद है। शीघ्र-परिपक्व होने वाले जीनप्रारूप देरी से वर्षा की स्थितियों (15 अगस्त तक) और सूखा-उन्मुख क्षेत्रों में फायदेमंद हो सकते हैं।

1033, RGC-936 and RGC-1066) having maturity duration of more than 90 days. The early-maturing genotypes may be rewarding under the delayed rainfall situations (up to August 15) and drought-prone areas.

हंस राज महला और रामावतार शर्मा

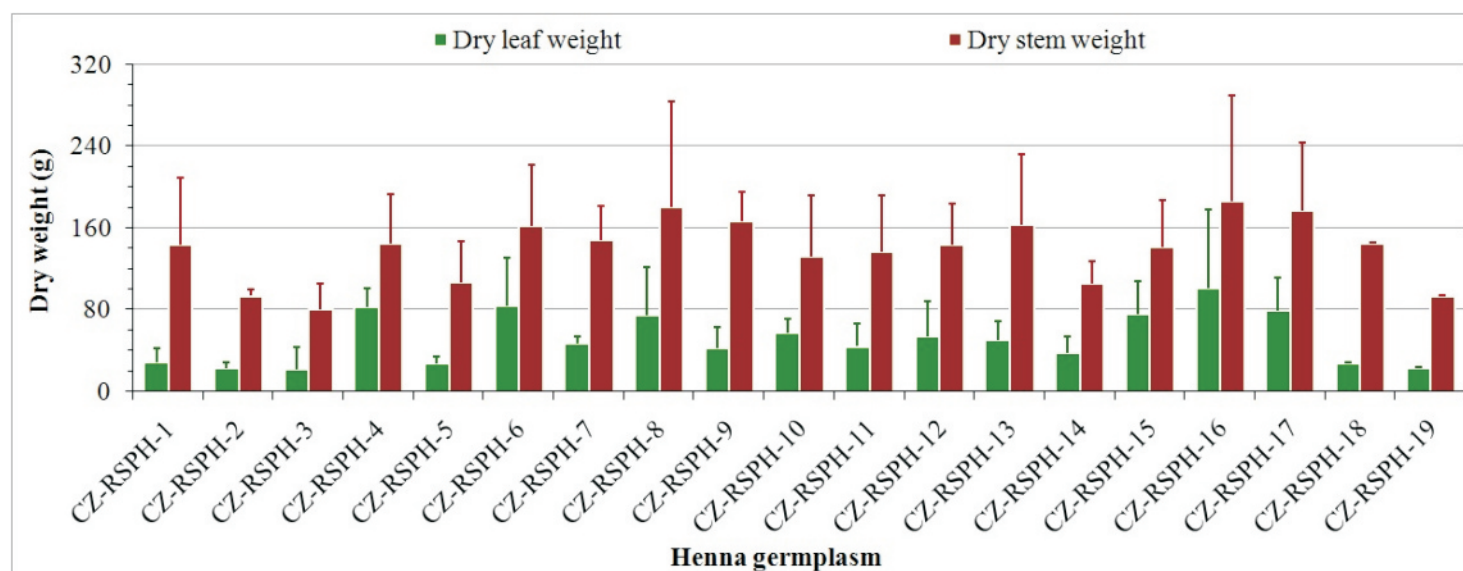
Hans Raj Mahla and Ramavtar Sharma

उत्पादकता बढ़ाने के लिए मेंहदी के संभावित आनुवंशिक संसाधनों की पहचान

पश्चिमी शुष्क राजस्थान में पाली जिले के सोजत क्षेत्र में मेंहदी की खेती 70 से अधिक वर्षों से पारंपरिक रूप से की जा रही है। ऐसा अनुमान है कि मेंहदी के कुल सूखी पत्तियों का लगभग 90 प्रतिशत (35,000 टन) उत्पादन पाली जिले में होता है, जहाँ मेंहदी की 35,000 हेक्टेयर क्षेत्र में खेती द्वारा प्राप्त वार्षिक उत्पादन का मूल्य 70 करोड़ रुपये है। इसके अलावा, शुष्क रेगिस्तानी भूमि में मरुस्थलीकरण प्रक्रिया को नियंत्रित करने में मेंहदी की खेती मददगार साबित हुई है और यह कृषक परिवारों को अतिरिक्त रोजगार भी प्रदान करती है। मेंहदी की खेती इतने बड़े पैमाने पर होने के बावजूद, मेंहदी की एक भी किस्म जारी नहीं हुई है और बीजों से उगाये गये मेंहदी के पौधे ही किसानों के खेतों में मिलते हैं। इसलिए, दीर्घकालिक उत्पादन और उपज के लिए मेंहदी के पौधों की मौजूदा परिवर्तनशीलता का आकलन करके संभावित आनुवंशिक संसाधनों की पहचान और उनका चयन करना महत्वपूर्ण है। इसलिए, पश्चिमी राजस्थान के मेंहदी की खेती वाले क्षेत्रों में किसानों के खेतों से इसकी आकारिकीय विशेषताओं और लॉसोन अंश के आधार पर मेंहदी के कुल 19 श्रेष्ठतर क्लोनल जननद्रव्य एकत्र किए गए। एकत्रित मेंहदी की कलमों का वर्ष 2017 में क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, पाली की नर्सरी में गुणन किया गया। नर्सरी के पौधों को बाद में प्रत्येक जननद्रव्य की तीन प्रतिकृतियों के साथ खेत में रोपित किया गया। मेंहदी के सर्वोत्तम जननद्रव्य को जानने के लिए कुल 19 जननद्रव्य का उच्च उपज और लॉसोन अंश के आधार पर क्षेत्र मूल्यांकन किया गया। परिणामों में पुष्पक्रम की न्यूनतम संख्या सीजेड-आरएसपीएच-8 (1.777) में तथा अधिकतम सीजेड-आरएसपीएच-12 (25.33) में दर्ज की गई। सूखी पत्ती की अधिकतम

Identification of Promising Genetic Resources of Henna (*Lawsonia inermis*) for Enhancing Productivity:

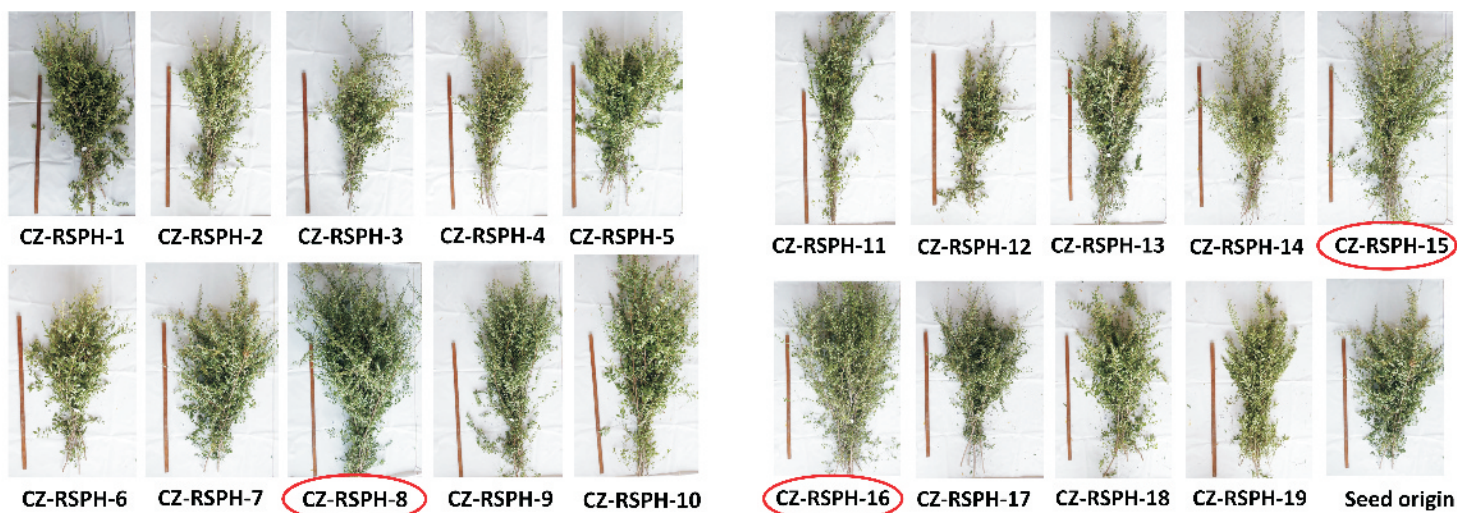
Cultivation of henna has been traditionally practised in Sojat area of Pali district in western arid Rajasthan for more than 70 years. Estimate shows that around 90% (35,000 tonnes) of the total dry leaves of henna is produced in Pali district where the henna cultivation takes place in 35,000 ha area with an annual production worth Rupees 70 crores. Besides, henna cultivation has proved helpful in controlling the desertification process in the arid desert land and also provides additional employment to farm families. In spite of large acreage under the henna cultivation, not a single released variety of henna exists, and populations of henna plants raised only from seeds exist at farmers' fields. Hence, it is imperative to identify and select the potential genetic resources of henna populations by assessing the existing variability for sustainable production and yield. Therefore, a total of 19 superior clonal germplasms of henna were collected based on morphological characteristics and lawsone content from farmers' fields located in henna growing areas of the western Rajasthan. The collected henna cuttings were multiplied in the nursery of the Regional Research Station, Pali in the year 2017. The nursery plants were later on transplanted in the field with three replications of each germplasm. The field evaluation of 19 henna germplasms was carried out to find the best germplasms of henna based on the higher yield and lawsone content. The



मेंहदी के क्लोनल जननद्रव्य की सूखी पत्ती की औसत उपज और सूखे तने का वजन
(बार चार्ट द्वारा औसत मान को दर्शाया गया है और बार के ऊपर खड़ी रेखाएं मानक विचलन को दर्शाती हैं)

Average dry leaf yield and dry stem weight of Henna clonal germplasms

(bar charts present the mean values and vertical lines above bars indicate standard deviation values)



मेंहदी के 19 क्लोनल जननद्रव्य के जैव भार में भिन्नता
Variation in above ground biomass for 19 henna clonal germplasms

उपज सीजेड-आरएसपीएच-16 (101.3 ± 76.85 ग्राम प्रति पौधा) में, जबकि न्यूनतम सीजेड-आरएसपीएच-3 (22 ± 20.78 ग्राम प्रति पौधा) में दर्ज की गई। परिणाम यह भी इंगित करते हैं कि क्लोनल जननद्रव्य सीजेड-आरएसपीएच-8 (74.67 ± 46.88 ग्राम प्रति पौधा), सीजेड-आरएसपीएच-15 (75.33 ± 32.52 ग्राम प्रति पौधा) और सीजेड-आरएसपीएच-16 (101.33 ± 76.85 ग्राम प्रति पौधा) से प्राप्त सूखी पत्तियों का वजन और साथ ही लॉसोन अंश सबसे अधिक था। दूसरी ओर, सूखे तने का वजन क्लोनल जननद्रव्य सीजेड-आरएसपीएच-16 (185.67 ± 103.93 ग्राम प्रति पौधा) एवं इसके बाद सीजेड-आरएसपीएच-8 (180 ± 104.04 ग्राम प्रति पौधा) के लिए सबसे अधिक पाया गया। इस प्रकार, तीन पहचाने गए क्लोनल जननद्रव्य यथा सीजेड-आरएसपीएच-8, सीजेड-आरएसपीएच-15 और सीजेड-आरएसपीएच-16 सूखी पत्तियों के उत्पादन के आधार पर श्रेष्ठतर जीनप्रारूप है और इन्हें मेंहदी फसल की किस्मों के रूप में जारी करने के लिए प्रस्तावित किया जा सकता है।

एम.बी. नूर मोहम्मद और ए.के. शुक्ला

minimum number of inflorescence was registered in CZ-RSPH-8 (1.777) and maximum in CZ-RSPH-12 (25.33). The maximum dry leaf yield was recorded in CZ-RSPH-16 (101.3 ± 76.85 g plant⁻¹) while the minimum in CZ-RSPH-3 (22 ± 20.78 g plant⁻¹). The results also indicated that the clonal germplasms CZ-RSPH-8, CZ-RSPH-15 and CZ-RSPH-16 yielded the highest weight of dry leaves, i.e. 74.67 ± 46.88 , 75.33 ± 32.52 and 101.33 ± 76.85 g plant⁻¹, respectively as well as lawsone content. On the other hand, the dry stem weight was found to be the highest for clonal germplasm CZ-RSPH-16 (185.67 ± 103.93 g plant⁻¹) followed by CZ-RSPH-8 (180 ± 104.04 g plant⁻¹). Thus, three identified clonal germplasms, i.e. CZ-RSPH-8, CZ-RSPH-15 and CZ-RSPH-16 are the superior genotypes in terms of dry leaves production and the same may be proposed for release as varieties of the henna plant.

M.B. Noor Mohamed and A.K. Shukla

बैठकें, गतिविधियाँ एवं प्रशिक्षण

अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत गतिविधियाँ: केन्द्र सरकार द्वारा पोषित अनुसूचित जाति उप-योजना को संस्थान एवं इसके चार क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्रों (राजस्थान में बीकानेर, पाली, जैसलमेर व गुजरात में भुज) में क्रियान्वित किया गया है। इस उप-योजना में राजस्थान और गुजरात के पाँच जिलों में 2145 से ज्यादा अनुसूचित जाति के किसान परिवारों को कृषि उपकरण व अन्य आदान जैसे तिरपाल और अनाज भण्डारण की टंकियों को वितरित कर लाभान्वित किया गया। मुफ्त वितरण का उद्देश्य कठिन श्रम को कम करने और उत्पादन और कार्य कुशलता को बढ़ाने के लिए उन्नत कृषि उपकरणों

Meetings, Events and Trainings

Activities under Scheduled Caste Sub Plan (SCSP): The central government-sponsored scheme on Scheduled Caste Sub Plan has been implemented at the institute and its four Regional Research Stations at Bikaner, Pali, Jaisalmer in Rajasthan and Bhuj in Gujarat. More than 2145 farm families of scheduled caste were benefitted across five districts of Rajasthan and Gujarat by free distribution of agricultural implements and other inputs such as tarpaulin sheets and grain storage tanks in this sub plan. The objective of free distribution was use of improved farm implements in

का उपयोग करना था। इसी तरह, 30 फीट × 24 फीट आकार का वजनी प्लास्टिक तिरपाल किसानों के लिए अप्रत्याशित मौसम और वर्षा से फसल को बचाने में बहुत उपयोगी है। किसानों को उपकरण वितरित करते समय उनका उपयोग करने के लिए भी प्रशिक्षित किया गया।

reducing drudgery and enhancing output and work efficiency. Similarly, the heavy-duty plastic tarpaulin of the size 30 feet × 24 feet is very useful for the farmers in protecting harvested crops from unforeseen weather and rainfall scenarios. The farmers were also trained for using the implements while distributing the same to them.

अनुसूचित जाति उप-योजना के अंतर्गत वितरित किए गए उपकरण और आयोजित प्रशिक्षण
Implements distributed and trainings conducted under SCSP

Implement/training	Jodhpur	Regional Research Station				Total
		Bikaner	Pali	Jaisalmer	Bhuj	
Sickle	1800	250	200	0	0	2250
Sprayer	57	116	0	50	0	223
Hand weeder	600	0	0	0	0	600
Seed storage bin	0	100	85	0	0	185
Tarpaulin	553	150	0	100	0	803
Rechargeable torch	0	110	0	0	0	110
Kassi	0	250	0	0	0	250
Off-campus training	10	5	4	3	1	23



अंतर-परिसर प्रशिक्षण कार्यक्रम: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा चार आंतरिक परिसरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। एकीकृत फसल प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 1 जनवरी को, एकीकृत कृषि प्रणाली पर 4 जनवरी को, मवेशियों में कृत्रिम गर्भाधान और बांझपन पर 7 से 18 फरवरी के दौरान और दूध के मूल्य संवर्धन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 26 मार्च को आयोजित किये गए। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में, फसल कटाई के बाद की तकनीकों, शुष्क क्षेत्र की फसलों का मूल्यवर्धन, शुष्क फल, फलों और सब्जियों की खेती में वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग, पशु वीर्य प्रबंधन, कृत्रिम गर्भाधान के बाद की सावधानी, प्रजनन संबंधी समस्याएं और उनके उपचार आदि के बारे में विशेषज्ञों द्वारा विभिन्न व्याख्यान दिए गए। प्रतिभागियों द्वारा वर्मीकम्पोस्ट इकाई, अपशिष्ट अपघटक इकाई, डेयरी इकाई, पोषक-वाटिका और बागानों का भ्रमण भी किया गया।



On-campus Training Programs: A total of four on-campus training programs were organized by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur. The training program on Integrated Crop Management was conducted on January 01, Integrated Farming System on January 04, Artificial Insemination and Infertility in Cattle during February 07-18 and Value Addition of Milk on March 26. In the training programs, various lectures on post-harvest techniques, value addition of arid zone crops, arid fruits, use of vermicompost in fruits and vegetable cultivation, cattle semen handling, post-artificial insemination precaution, reproductive problems and their treatments etc. were delivered by the experts. A visit of vermicompost unit, waste decomposer unit, dairy unit, nutri-garden and orchards was also conducted for the participants.



बाह्य परिसरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा सात बाह्य परिसरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम जोधपुर जिले के पाँच गाँवों में आयोजित किये गए। डेयरी पशुओं में बांझपन प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 27 से 29 जनवरी के दौरान गाँव पालड़ी राणावतां (भोपालगढ़) में, घरेलु कार्यों में कठिन श्रम कम करने की तकनीक (बेहतर बड़ी निर्माण) पर 5 फरवरी को गाँव लावड़ी (भोपालगढ़) में, डेयरी पशुओं में खनिज और विटामिन-युक्त चारा पर 26 फरवरी को गाँव लावड़ी (भोपालगढ़) में, डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य और पोषण प्रबंधन पर 28 फरवरी से 2 मार्च के दौरान गाँव बाखलिया (पीपाड़ सिटी) में, संकर गाय में उत्पादन रोग प्रबंधन पर 9 से 11 मार्च के दौरान गाँव शिकारगढ़ (जोधपुर) में, सूखे की स्थिति में पशु स्वास्थ्य, पोषण और प्रजनन प्रबंधन पर 14 से 16 मार्च के दौरान गाँव सेर (लूणी) एवं स्वास्थ्य, पोषण और प्रोटोजोआ रोग प्रबंधन पर 21 से 23 मार्च के दौरान गाँव लावड़ी (भोपालगढ़) में आयोजित किया गया।

जलीय संवर्धन पर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण कार्यक्रम: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, भुज द्वारा 12 से 16 जनवरी के दौरान जलीय संवर्धन क्षेत्र के उद्यमिता अवसरों पर अनुसूचित जाति के मछुआरों, किसानों, युवाओं और महिलाओं के लिए 5 दिवसीय प्रशिक्षण, जागरूकता और क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड (एनएफडीबी) और राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (मैनेज), हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया। कार्यक्रम के समापन सत्र के दौरान, नाबार्ड (कच्छ) के जिला विकास प्रबंधक, श्री नीरज कुमार सिंह ने प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान को अमल में लाने के महत्व पर प्रकाश डाला। कृषि विज्ञान केंद्र के अध्यक्ष, डॉ. मनीष कांवट ने प्रतिभागियों से सीखे गये कौशल का उपयोग करने और छोटे पैमाने पर उद्यम शुरू करने का आग्रह किया। इस प्रशिक्षण से कुल 30 महिला प्रतिभागी लाभान्वित हुईं।

Off-campus Training Programs: CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur organized seven off-campus training programs in five villages of Jodhpur district. The training program on Infertility Management in Dairy Animals was conducted during January 27-29 at village Paladi Ranawatan (Bhopalgarh), Drudgery Reduction Technologies (Improved Badi Maker) at Homestead Level on February 05 at village Lawari (Bhopalgarh), Minerals and Vitamins Feeding in Dairy Animals on February 26 at village Lawari (Bhopalgarh), Health and Nutritional Management of Dairy Animals from February 28 to March 02 at village Bakhliya (Pipar City), Production Diseases Management in Cross-bred Cow during March 09-11 at village Shikargarh (Jodhpur), Livestock Health, Nutritional and Reproductive Management in Drought during March 14-16 at village Ser (Luni), and Health, Nutrition and Protozoan Disease Management during March 21-23 at village Lawari (Bhopalgarh) of Jodhpur district.

Training and Capacity Building Program on Aquaculture Sector: A five-day Training, Awareness and Capacity Building Program to scheduled cast fishermen, farmers, youth and women on Entrepreneurial Opportunities of Aquaculture Sector was organized by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Bhuj during January 12-16. The training was sponsored by National Fisheries Development Board (NFDB) and National Institute of Agricultural Extension Management (MANAGE), Hyderabad. During the concluding session of the program, District Development Manager of NABARD (Kutch), Shri Niraj Kumar Singh pointed out the importance of translating the learning acquired from the training program into action. Dr. Manish Kanwat, KVK Head urged the participants to make use of the learnt skills and to initiate small-scale venture. A total of 30 women participants were benefitted from the training.



राष्ट्रीय बालिका दिवस काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा 24 जनवरी को स्कूली छात्राओं के साथ आंगनवाड़ी केंद्र, भगत की कोठी, जोधपुर में मनाया गया। इस अवसर पर बालिकाओं को स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, शिक्षा और सुरक्षा के प्रति जागरूक किया गया। स्कूली छात्राओं को इस दिन के महत्व और इसे मनाने के कारण के बारे में भी बताया गया। बालिकाओं को विभिन्न पोषक तत्वों के बारे में ज्ञान बढ़ाने के लिए पोषक थाली पर एक प्रदर्शन किया गया। अधिक संख्या में बालिकाओं के बीच जागरूकता लाने के लिए पोषक थाली पर फोल्डर भी वितरित किए गए। कार्यक्रम में कुल 21 स्कूली छात्राओं, 3 आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और 3 कृषि विज्ञान केंद्र के अधिकारियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय बालिका दिवस काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, पाली में भी मनाया गया। इस आयोजन में कुल 35 किसानों और किसान महिलाओं ने भाग लिया।



73वां गणतंत्र दिवस संस्थान और क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्रों में 26 जनवरी को उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। इस अवसर पर निदेशक (कार्यवाहक) डॉ. एन.वी. पाटिल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और कर्मचारियों को संबोधित किया। उन्होंने सभी को देश के विकास और समृद्धि में अपनी भूमिका और जिम्मेदारी को समझने और निभाने के लिए प्रोत्साहित किया।



National Girl Child Day was celebrated by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur with school girls at Anganwadi Kendra, Bhagat Ki Kothi, Jodhpur on January 24. On this occasion, awareness was created about health, hygiene, nutrition, education and safety of the girl child. The school girls were also explained about the importance of this day and reason to celebrate it. A demonstration on Poshak Thali was made to the girls for increasing their knowledge about various nutritive elements. Folders on Poshak Thali were also distributed among the girls for creating awareness in more numbers. A total of 21 school girls, 3 Anganwadi workers and 3 KVK officials participated in the program.

The National Girl Child Day was celebrated also at CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Pali for the welfare of girl child. A total of 35 farmers and farm women participated in the event.



73rd Republic Day was celebrated with enthusiasm and vivacity at the Institute and Regional Research Stations on January 26. On this occasion, Director (Acting) Dr. N.V. Patil hoisted the national tricolor and addressed the staff. He encouraged everyone to understand and fulfill their role and responsibility in the development and prosperity of the country.





खारे पानी की फिन-मछली की प्रजाति (चानोस-चानोस) के बीज उत्पादन और मत्स्य-पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, भुज द्वारा 27 से 31 जनवरी के दौरान आयोजित किया गया। अनुसूचित जाति के युवाओं, किसानों और महिलाओं के लिए तैयार किया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम एनएफडीबी और मैनेज, हैदराबाद द्वारा प्रायोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान, प्रतिभागियों को उनकी आय में संवर्धन के लिए नाबार्ड, हस्तशिल्प आयुक्तालय, ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान, और मत्स्य विभाग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में जागरूक किया गया। कार्यक्रम में, किसानों ने अपनी आजीविका के उत्थान के लिए अपने आस-पास के क्षेत्र में चानोस-चानोस मछली के बीज उत्पादन के भविष्य के अवसरों के बारे में जाना। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 युवाओं, कृषि महिलाओं और प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।



महिला स्वास्थ्य शिविर का आयोजन काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा 29 जनवरी को भोपालगढ़ पंचायत समिति के पोषण-स्मार्ट ग्राम पालडी राणावतां में किया गया। शिविर का मुख्य उद्देश्य नारी परियोजना के तहत पोषण-स्मार्ट गाँव में कृषि महिलाओं की पोषण स्थिति का निरीक्षण करना था। कार्यक्रम के दौरान, 30 कृषि महिलाओं और किशोर लड़कियों के हीमोग्लोबिन स्तर, ऊँचाई, वजन आदि सहित शरीर के विभिन्न मापदंड उनके स्वास्थ्य की स्थिति जाँचने के लिए दर्ज किये गए।

सीमा सुरक्षा बल, जोधपुर के महानिरीक्षक का संस्थान दौरा: सीमा सुरक्षा बल जोधपुर के महानिरीक्षक श्री एम.एस. राठौड़ ने 4 फरवरी को संस्थान का भ्रमण किया। इस दौरान, उन्होंने शुष्क भूमि के पशुओं के लिए पौष्टिक चारे के विकास पर अनुसंधान गतिविधियों में रुचि ली और सीमा सुरक्षा बल के सैनिकों के लिए काम करने वाले रेगिस्तानी जहाज यानी ऊँटों के लिए विभिन्न प्रकार के पौष्टिक चारे की आवश्यकता के बारे में चर्चा की। उन्हें सीमावर्ती क्षेत्रों में ऊँटों के चारे के रूप में मुरठ घास, बुरेरो घास के साथ धामण एवं मोडा धामण घास का उपयोग करने की सलाह दी गई। निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने

Training Program on Seed Production and Culture of Brackish Water Fin-Fish (*Chanos-Chanos*) Species was organized by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Bhuj during January 27-31. The training program, designed for scheduled caste youth, farmers and women, was sponsored by NFDB and MANAGE, Hyderabad. During the program, participants were made aware about various schemes run by NABARD, Commissionerate of Handicraft, Rural Self Employment Training Institute (RSETI), and Department of Fishery to enhance their income. In the program, farmers learnt about the future avenues of seed production of Chanos-Chanos fish in their locality to uplift their livelihood. A total of 30 youth, farm women and progressive farmers participated in the training program.



Woman Health Camp was organized by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur on January 29 at nutri-smart village Paladi Ranawatan in Bhopalgarh Panchayat Samiti. The main objective of the camp was to observe the nutritional status of the farm women at nutri-smart village under the NARI project. During the program, different body parameters including hemoglobin level, height, weight etc. of 30 farm women and adolescent girls were observed and recorded to determine their health status.

Inspector General of BSF Jodhpur visited Institute: Inspector General of Border Security Force, Jodhpur, Sh. M.S. Rathore visited the institute on February 04. During his visit, he took interest in research activities on nutritious fodder development for livestock of drylands and discussed about the need of different varieties of nutritious fodder for the desert ship, camels working for the BSF soldiers. He was advised to use Murath grass, camel grass, along with *Cenchrus ciliaris* and *Cenchrus setigerus* grass as fodder for camels in the border areas. Director Dr. O.P. Yadav, while

शुष्क भूमि के किसानों के लिए फसल वाटिका के महत्व को समझाते हुए बताया कि संस्थान के फसल वाटिका में सात फसलों की 80 किस्मों को प्रदर्शित किया गया है जिससे किसानों को उपयुक्त फसल किस्मों का चयन करने में मदद मिलती है। उन्हें पॉलीहाउस में खीरा और टमाटर की खेती, बेर की 40 किस्मों, ईसबगोल की विभिन्न किस्मों, जीरा, मेथी, चिया, राजगिरा, क्विनोआ और सरसों की फसल वाटिका में खेती जैसी तकनीकों के बारे में बताया गया। इसके अलावा, यह आश्वासन दिया गया कि यदि आवश्यक हुआ तो संस्थान की ओर से सीमा सुरक्षा बल को वैज्ञानिक सहायता प्रदान की जाएगी।



उन्नत कृषि यन्त्र पर महिलाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम काजरी-कृषि विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 'निकरा' परियोजना के अंतर्गत गोद लिए गए लवारी गाँव में 5 फरवरी को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को यह बताया गया कि उन्नत कृषि यन्त्र द्वारा समय एवं श्रम की 75 प्रतिशत तक बचत होती है। साथ ही उन्नत यन्त्र द्वारा बड़ियाँ बनाने पर विधि प्रदर्शन दिया गया, जिससे स्वयं सहायता समूह की महिलाएं कम समय में अधिक उत्पाद बनाकर अपनी आय बढ़ा सकें। प्रगतिशील किसानों एवं समूह सखी ने इस तकनीक को उपयोगी बताया एवं खूब सराहा।

संभागीय आयुक्त, जोधपुर का संस्थान भ्रमण: जोधपुर के संभागीय आयुक्त श्री राजेश शर्मा ने 6 फरवरी को संस्थान का भ्रमण किया। निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने संस्थान के फसल वाटिका में लगाई गई ईसबगोल की 9, मेथी की 7, चिया की 6, राजगिरा की 9, क्विनोआ की 10 और सरसों की 30 किस्मों की विशेषताओं के बारे में बताते हुए कहा कि फसल वाटिका से किसान फसलों की नई किस्मों को अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। संभागीय आयुक्त ने पॉलीहाउस में उचित मात्रा में खाद और जल के माध्यम से खीरा और टमाटर जैसी सब्जियों में पोषक तत्वों की पूर्ति के लिए स्वचालित सिंचाई और उर्वरक प्रणाली, फसल वाटिका, एकीकृत कृषि प्रणाली, थारपारकर गाय पालन, बेर और अनार के बगीचे और पशु खाद्य प्रौद्योगिकी इकाई में चल रहे

explaining the importance of the crop cafeteria for the dryland farmers, told that 80 varieties of seven crops are displayed in the institute's crop cafeteria to help the farmers in selecting appropriate crop varieties. He was informed about the institute technologies such as cultivation of cucumber and tomato in the polyhouse, 40 varieties of ber, different varieties of isabgol, cumin, fenugreek, chia, rajgira, quinoa and mustard planted in crop cafeteria. Further, it was assured that the scientific assistance from the institute would be provided to Border Security Force, if needed.



Training Program on Improved Agricultural Device for Women was organized by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur on February 05 in Lawari village adopted under 'NICRA' project. During the program, women were told that use of improved agricultural implement saves up to 75% of time and labor. Besides, a demonstration on making Badi using the improved tool was provided, to enable the women of Self-Help Group increase their income by making more products in less time. Progressive farmers and Sakhi group described this technique as useful and appreciated it a lot.

Visit of Divisional Commissioner of Jodhpur: Shri Rajesh Sharma, Divisional Commissioner of Jodhpur visited the institute on February 06. During the visit, Director Dr. O.P. Yadav, explaining characteristics of 9 varieties of Isabgol, 7 of fenugreek, 6 of chia, 9 of rajgira, 10 of quinoa and 30 of mustard planted in the crop cafeteria of the institute, told that farmers are getting motivated to adopt new varieties of crops after visiting the crop cafeteria. The Divisional Commissioner closely observed the ongoing research works of automatic irrigation and fertilizers system for the fulfillment of nutrients in vegetables like cucumber and tomato planted in the polyhouse through proper amount of manure and water, crop cafeteria, integrated farming system,



अनुसंधान कार्यों का बारीकी से अवलोकन किया और इन कार्यों को किसानों के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने बेर के बगीचे में लगाये गए सेव, गोला, जोगिया, छुहारा, थाई बेर, उमरान, अलीगंज, टिकड़ी, इलायची और रश्मि जैसी बेर किस्मों की मिठास का स्वाद लिया। संभागीय आयुक्त ने शुष्क भूमि में कृषि के क्षेत्र में संस्थान द्वारा किए गए शोध की सराहना की और उपयोगी अनुसंधान तकनीकों को प्रयोगशाला से किसानों के खेत तक स्थानांतरित करने के लिए किसानों को अधिक प्रशिक्षण देने की आवश्यकता पर बल दिया।



मशरूम, वर्मीकम्पोस्ट, जैविक खाद और पोषण-वाटिका पर विधि दर्शन: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, पाली ने मशरूम की खेती (8 फरवरी और 13 मार्च), वर्मीकम्पोस्ट की तैयारी (15 मार्च), जैविक उत्पादों/उर्वरकों जैसे अपशिष्ट अपघटक और जीवामृत (24 फरवरी) और पोषण-वाटिका के लिए लेआउट और भूमि की तैयारी (22 फरवरी) पर कुल 5 विधि प्रदर्शन आयोजित किए, जिससे किसानों में जागरूकता बढ़ाई जा सके और सीखकर करने के माध्यम से कौशल विकास किया जा सके। इन प्रदर्शनों में कुल 146 किसान, किसान महिलाएं और ग्रामीण युवा लाभान्वित हुए।



Tharparkar cow rearing, ber and pomegranate orchards and works in Animal Food Technology Unit and described these works as useful for the farmers. He tasted the sweetness of ber varieties like Sev, Gola, Jogia, Chhuhara, Thai Ber, Umran, Aliganj, Tikdi, Elaichi, and Rashmi planted in the ber orchard. The Divisional Commissioner appreciated the research conducted by the institute in the field of agriculture in arid region and emphasized on the need to impart more trainings to the farmers for transferring the useful research technologies from the laboratory to the farmers' field.



Method Demonstrations on Mushroom, Vermicompost, Organic Fertilizers and Nutri-garden: CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Pali conducted a total of five method demonstrations on mushroom cultivation (February 08 and March 13), vermicompost preparation (March 15), preparation of organic products/fertilizers like waste decomposer and Jeevamrutha (February 24) and preparation of land and layout for nutri-garden (February 22) to increase the awareness amongst the farmers and skill development through learning by doing. A total of 146 farmers, farm women and rural youth were benefitted under these demonstrations.



विश्व दलहन दिवस के उपलक्ष्य में काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा 10 फरवरी को जोधपुर की बालेसर पंचायत समिति के ग्राम भटालाई पुरोहिता में विश्व दलहन दिवस मनाया गया। उत्सव का उद्देश्य किसानों को दलहन उत्पादन की उन्नत तकनीक के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम के दौरान, मानव आहार में दालों के महत्व के बारे में कृषक समुदाय के बीच जागरूकता पैदा की गई और उन्हें दालों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए तकनीकों का सुझाव दिया गया। कार्यक्रम में 12 कृषि महिलाओं सहित कुल 52 किसानों ने भाग लिया।



World Pulses Day was celebrated by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur on February 10 at village Bhatalai Purohitan in Balesar Panchayat Samiti of Jodhpur. The motive of the celebration was to make the farmers aware about the improved technology of pulses production. During the program, awareness was created among farming community about importance of pulses in human diet and they were suggested technologies to increase the production of pulses. A total of 52 farmers including 12 farm women participated in the program.

एक दिवसीय आधारभूत सर्वेक्षण और किसान पारस्परिक विचार-विमर्श कार्यक्रम क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, लेह द्वारा टीएसपी योजना के तहत माथो गाँव को गोद लेने का समारोह मनाने के लिए 12 फरवरी को एलएएचडीसी कार्यालय परिसर, लेह में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में कार्यकारी सभासद कृषि श्री स्टैंजिन चोस्फेल ने ग्राम उत्थान कार्यक्रम के लिए हर तरह का समर्थन और सहयोग प्रदान करने का वादा किया और माथो गाँव के किसानों को आगे आकर विभिन्न योजनाओं का लाभ उठाने के लिए कहा। कार्यक्रम में लद्दाख के विभिन्न गाँवों में किए गए स्थात्र के टीएसपी कार्यक्रम में की गई गतिविधियों की भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में सरपंच, पंच, नंबरदार सहित माथो गाँव के किसानों और अन्य प्रतिनिधियों और उद्यमियों के साथ स्थात्र के कर्मचारियों ने भाग लिया।

One-day Baseline Survey and Farmers' Interaction Program was organized by Regional Research Station, Leh on February 12 at LAHDC Office Campus, Leh to celebrate the adoption of Matho village under the TSP Scheme. In the program, Executive Councillor Agriculture, Sh. Stanzin Chosphel promised to provide all kind of support and cooperation for village upliftment program and asked the farmers of Matho village to come forward and avail the benefits of the various schemes. In the program, activities undertaken in TSP program of the station carried out in different villages of Ladakh were also briefed. Farmers and other representatives of Matho village including Sarpanch, Panchs, Nambardar and entrepreneurs along with staff of the station participated in the program.



जोधपुर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी का काजरी भ्रमण: जोधपुर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. इंद्रजीत यादव ने 13 फरवरी को संस्थान का भ्रमण किया। भ्रमण के दौरान उन्होंने कहा कि संस्थान के वैज्ञानिकों ने कृषि के विकास के लिए उत्कृष्ट तकनीकों का विकास किया है, जो

CEO of Jodhpur Development Authority visited the institute: Chief Executive Officer of Jodhpur Development Authority, Dr. Indrajit Yadav visited the institute on February 13. During the visit, he said that scientists of the institute have developed excellent technologies for the development



किसानों की आय और आजीविका को बढ़ाने में मदद कर सकता है। निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने पॉलीहाउस में टमाटर और खीरा उत्पादन की नवीनतम तकनीकों के बारे में बताया और कहा कि पॉलीहाउस में लगाई गई सब्जियां कम पानी की उपलब्धता और प्रतिकूल पर्यावरण परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए थार रेगिस्तान के किसानों के लिए बहुत उपयोगी साबित होगी। मुख्य कार्यकारी अधिकारी को फसल वाटिका में लगाए गए जीरा, ईसबगोल, मेथी, राजगिरा, चिया, विवनोआ और सरसों की विभिन्न किस्मों से अवगत कराया गया। इसके अलावा, उन्हें आंवला और अनार की विभिन्न किस्मों के साथ-साथ बेर के बगीचे में लगाई गई बेर की 40 किस्मों के बारे में अवगत कराया गया। उन्होंने पॉलीहाउस, फसल वाटिका और बेर बागानी के क्षेत्र में संस्थान द्वारा किए जा रहे अनुसंधान और नवाचारों की सराहना की।



जोधपुर जिला कलेक्टर का संस्थान दौरा: जोधपुर जिला कलेक्टर, श्री हिमांशु गुप्ता ने संस्थान का 15 फरवरी को भ्रमण किया। उन्होंने बेर के बगीचे में फलों से लदी हुई झाड़ियों से बेर तोड़कर चखा और बोले कि बचपन की याद आ गई। उन्होंने बेर की बागवानी को किसानों की आय में बढ़ोतरी के लिए उपयोगी बताया। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा आयोजित प्रदर्शनी और किसान मेले किसानों को वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के लिए प्रेरित करने और जागरूक करने का अच्छा अवसर प्रदान करेंगे। इसके अलावा, उन्होंने प्रगतिशील और जागरूक किसानों से संस्थान के कार्यक्रमों में भाग लेने का आह्वान किया। इससे पहले निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने उन्हें बताया कि संस्थान द्वारा हर साल विभिन्न किस्मों के 50 से 60 हजार बेर के पौधे किसानों को उपलब्ध कराए जाते हैं। राजस्थान के अलावा अन्य राज्यों के किसान भी संस्थान में बेर के पौधे लेने आते हैं। जिला कलेक्टर को बताया गया कि संस्थान में बेर की लगभग 46 किस्में उपलब्ध हैं। इन किस्मों में से गोला किस्म जोधपुर के स्थानीय लोगों द्वारा सबसे अधिक पसंद की जाती है। डॉ. प्रवीण कुमार, अध्यक्ष ने कहा कि बेर में विटामिन सी, बी कॉम्प्लेक्स जैसे पोषक तत्व होते हैं और इलायची किस्म की बेर अन्य किस्मों से अधिक मीठी होती है।

of agriculture, which can help in enhancing the farmers' income and livelihood. Director Dr. O.P. Yadav provided the details of the latest technology of tomato and cucumber productions in the polyhouse and said that the vegetables planted in the polyhouse should prove to be very useful for the farmers of the Thar desert keeping in mind the low water availability and adverse environmental conditions. The CEO was apprised of the different varieties of cumin, isabgol, fenugreek, rajgira, chia, quinoa and mustard planted in the crop cafeteria. In addition, he was introduced to 40 varieties of ber planted in the ber orchard along with different varieties of aonla and pomegranate. He appreciated the research and innovations being done by the institute in the field of polyhouse, crop cafeteria and ber plantation.

District Collector of Jodhpur visited the institute: District Collector of Jodhpur, Shri Himanshu Gupta visited the institute on February 15. He tasted ber from the bushes laden with fruits in the ber orchard and said that it make him remember his childhood. He described ber horticulture useful for increasing the farmers' income. He told that the institute-organized exhibitions and farmers fairs will provide a good opportunity to motivate the farmers and make them aware to do farming in a scientific way. Further, he called upon progressive and awared farmers to participate in the institute's events. Earlier, Director Dr. O.P. Yadav informed him that every year 50-60 thousand budded ber plants of different varieties are made available to the farmers by the institute. Apart from Rajasthan, farmers from other states also come to the institute get ber saplings. The Collector was informed that about 46 varieties of ber are available at the institute. Among these varieties, Gola variety is the most preferred by the local people of Jodhpur. Dr. Praveen Kumar, Head said that ber has nutritious elements like vitamin C, B complex and ber of elaichi variety are more sweet than other

जिला कलेक्टर ने फसल वाटिका में लगाए गए जीरा, ईसबगोल, चिया, मेथी, राजगिरा, सरसों जैसी फसलों का अवलोकन किया। उन्हें पॉलीहाउस के तहत खीरा और टमाटर में उपयोग की जाने वाली ग्राफ्टिंग तकनीक के बारे में भी बताया गया, जिससे अच्छी पैदावार होती है और इसमें किसानों की आय बढ़ाने की क्षमता है। इसके साथ ही उन्हें जलाशयों आदि से जल के वाष्पीकरण को कम करने की तकनीकों से अवगत कराया गया।



सरसों और चना पर प्रक्षेत्र दिवस: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर ने सरसों और चना की खेती की उन्नत तकनीकों के बारे में किसानों के बीच जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से जोधपुर जिले के तीन गाँवों में तीन प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया। सरसों की फसल की खेती पर प्रक्षेत्र दिवस ग्राम पालड़ी राणावतां (भोपालगढ़) में 17 फरवरी को तथा ग्राम दुधाबेरा (बालेसर) में 28 फरवरी को तथा चना उत्पादन पर ग्राम बिलाड़ा (बिलाड़ा) में 25 फरवरी को आयोजित किए गए। कार्यक्रम के दौरान, कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर और राज्य कृषि विभाग के विशेषज्ञों ने किसानों को उन्नत तकनीक का उपयोग करके तिलहन और दलहन फसलों का उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। प्रक्षेत्र दिवसों में 12 कृषि महिलाओं सहित कुल 117 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

varieties. The District Collector observed the crops like cumin, isabgol, chia, fenugreek, rajgira, mustard planted in crop cafeteria. He was also informed about grafting technique used in cucumber and tomato under polyhouse, which yielded good yield and has the potential to increase the farmers' income. In addition, he was apprised about the techniques to reduce the evaporation of water from water bodies.



Field days on mustard and chickpea: CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur organized three field days in three villages of Jodhpur district with an objective to create awareness among the farmers about improved technologies of mustard and chickpea cultivation. The field days were conducted on mustard crop cultivation at village Palari Ranawatan (Bhopalgarh) on February 17 and village Dudhabera (Balesar) on February 28 and field day on chickpea production at village Bilara (Bilara) on February 25. During the program, experts from KVK, Jodhpur and State Agriculture Department motivated the farmers for increasing the production of oilseeds and pulses crops by using improved technology. A total of 117 participants including 12 farm women participated in the field days.



शुष्क क्षेत्रों में जल संरक्षण व जल के इष्टतम उपयोग पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित संस्थान के सीड असाकोडर परियोजना के अर्न्तगत बायफ प्रांगण, बाड़मेर में 19 फरवरी को आयोजित किया

One Day Training Program on Water Conservation and Optimum Use of Water in Arid Regions was organized on February 19 at BAIF campus, Barmer under the SEED-ASACODER project of the institute funded by the Department of Science and Technology, New Delhi. In this



गया। इस कार्यक्रम में जल के टांकों पर लगे सोलर पंप, ड्रिप सिस्टम व नैट हाउस का रखरखाव, उपयुक्त बारानी खेती, बागवानी और औषधीय व सुगन्धित फसलों पर प्रशिक्षण दिया गया। तत्पश्चात् परियोजना द्वारा लाभान्वित किसानों के खेतों का अवलोकन किया गया व उन्हें अपनी आय बढ़ाने हेतु उचित तकनीकों की जानकारी दी गई। साथ ही किसानों की जल की कमी से सम्बंधित समस्याओं का भी उचित समाधान किया गया। कार्यक्रम में तीन गाँवों के 38 किसानों ने भाग लिया।

रबी फसलों की उन्नत खेती पर प्रक्षेत्र दिवस: क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, जैसलमेर में 19 फरवरी को रबी फसलों की उन्नत खेती पर एक प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जैसलमेर जिले के बासनपीर गाँव के कुल 25 किसानों ने भाग लिया। डॉ. एम. पाटीदार, अध्यक्ष ने प्रतिभागियों का स्वागत किया और फसल उत्पादकता और किसानों की आय बढ़ाने के लिए रबी फसलों की कृषि संबंधी प्रथाओं के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में किसानों को रबी फसलों में कीटों की समस्याओं और उनके समाधान, उन्नत किस्मों के बीजों के महत्व और उच्च बीज उत्पादन के लिए उनकी खेती के तरीकों और रबी फसलों में रोगों के नियंत्रण के उपायों के बारे में बताया गया। किसानों ने प्रायोगिक क्षेत्रों का भ्रमण किया और उन्हें तारामीरा (आरटीएम-314), सरसों (एनआरसीएचबी-101), चना (जीएनजी-2171) और जीरा (आरजेड-209, आरजेड-19, जीसी-4 और निर्मल) की उन्नत किस्मों को देखकर प्रसन्नता हुई।



चना और गेहूँ पर प्रक्षेत्र दिवस: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, पाली द्वारा चना (किस्म आरएसजी-974) और गेहूँ (किस्म करण वंदना) फसलों पर पाली के 5 गाँवों में छह प्रक्षेत्र दिवसों का आयोजन किया गया, ताकि उन्नत कृषि विधियों के साथ अधिक उपज वाली किस्म को



program, training was provided on solar pumps fitted on water tankas, maintenance of drip system and net house, suitable rainfed cropping, horticultural, medicinal and aromatic crops. Thereafter, a visit was made to fields of the farmers, who were benefited by the project. Farmers were imparted knowledge about appropriate technologies to increase their income. Along with this, the problems of the farmers related to water scarcity were also suitably resolved. In the program, 38 farmers from three villages participated.

Field Day on Improved Cultivation of Rabi Crops: A Field Day on Improved Cultivation of Rabi Crops was organized at Regional Research Station, Jaisalmer on February 19. A total of 25 farmers from Basanpeer village of Jaisalmer district participated in the program. Dr. M. Patidar, Head welcomed the participants and highlighted the importance of agronomic practices of rabi crops for enhancing crop productivity and farmers' income. In the program, farmers were explained about the problems of insect pest in rabi crops and their solutions, importance of seeds of improved varieties and their cultivation practices for higher seed production, and control measures for diseases in rabi crops. Farmers visited the experimental fields and were excited to see improved varieties of tarameera (RTM-314), mustard (NRCHB-101), chickpea (GNG-2171) and cumin (RZ-209, RZ-19, GC-4 and Nirmal).



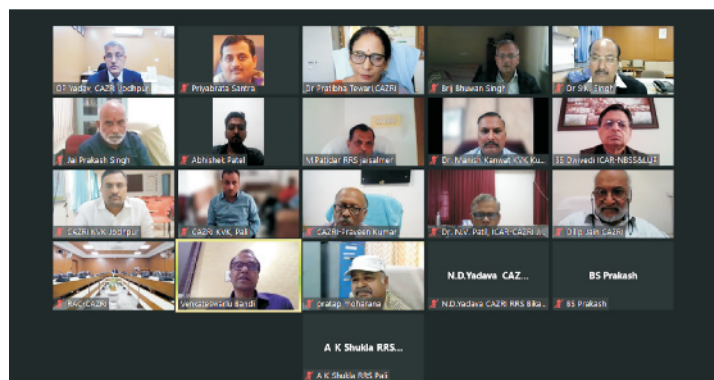
Field days on chickpea and wheat: CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Pali organized six field days on chickpea (variety RSG-974) and wheat (variety Karan Vandana) crops in 5 villages of Pali to popularize the high-yielding variety with improved



लोकप्रिय बनाया जा सके। गेहूँ के प्रक्षेत्र दिवस गाँव बाघावास (सोजत) में 8 मार्च, हिंगोला (मारवाड़) में 16 मार्च को आयोजित किए गए और चना के प्रक्षेत्र दिवस 3 मार्च को चोपड़ा (सोजत) में, 23 फरवरी और 11 मार्च को हेमावास (पाली) में और 28 फरवरी को चुंदलाई (सोजत) में आयोजित किए गए। कुल 201 किसानों, कृषि महिलाओं और अन्य हितधारकों ने प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रमों में भाग लिया।

संस्थान की 15वीं अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक

25 से 26 फरवरी के दौरान हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डॉ. बी. वेंकटेश्वरलू, पूर्व कुलपति, वीएनएमकेवी, परभणी, महाराष्ट्र ने की। बैठक में आरएसी के अन्य सदस्य, डॉ. एस. भास्कर, एडीजी (एएफ और सीसी), भाकृअनुप, नई दिल्ली; डॉ. ए.आर. शर्मा, निदेशक (अनुसंधान), आरएलबीसीएयू, झांसी; डॉ. बी.बी. सिंह, पूर्व एडीजी (ओ एंड पी), भाकृअनुप, नई दिल्ली; डॉ. ए.के. वशिष्ठ, पूर्व एडीजी (पीआईएम), भाकृअनुप, नई दिल्ली; डॉ. बी.एस. प्रकाश, पूर्व एडीजी (एएन), भाकृअनुप, नई दिल्ली; और डॉ. बी.एस. द्विवेदी, निदेशक, भाकृअनुप-एनबीएसएस एंड एलयूपी, नागपुर उपस्थित हुए। बैठक की शुरुआत में निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने आरएसी के अध्यक्ष और सदस्यों का स्वागत किया और संस्थान की समग्र उपलब्धियों और नई पहलों को प्रस्तुत किया। डॉ. पी. सांतरा, सदस्य सचिव, ने 7 नवंबर 2020 को आयोजित पिछली आरएसी बैठक की सिफारिशों पर की गई कार्रवाई रिपोर्ट (एटीआर) प्रस्तुत की, जिसके बाद संभागों, क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्रों और कृषि विज्ञान केन्द्रों के अध्यक्षों द्वारा अनुसंधान उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया। आरएसी समिति द्वारा संस्थान के भविष्य के शोध कार्यों हेतु कुछ सिफारिशें प्रस्तावित की गईं।



प्राकृतिक खेती पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यक्रम क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, लेह द्वारा 25 फरवरी को आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान, प्राकृतिक खेती पर एक विस्तृत प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर नीति आयोग द्वारा शुरू की गई वेबसाइट का विवरण प्रदान किया गया। इस बात पर बल दिया गया कि खेती की पारंपरिक स्वदेशी प्रथाएं बाहरी रूप से खरीदे गए आदान को कम करती हैं और साथ ही पर्यावरण, मिट्टी और मानव स्वास्थ्य में भी सुधार करती हैं।

package of practices. The field days on wheat were organized at village Baghawas (Sojat) on March 08, Hingola (Marwar) on March 16 and field days on chickpea were organized at Chopra (Sojat) on March 03, Hemawas (Pali) on February 23 and March 11 and Chundlai (Sojat) on February 28. A total of 201 farmers, farm women and other stakeholders participated in the field day programs.

XV Research Advisory Committee (RAC) meeting of the institute was held during February 25-26 in hybrid mode. The meeting was chaired by Dr. B. Venkateswarlu, Former Vice-Chancellor, VNMKV, Parbhani, Maharashtra. The other members of RAC, Dr. S. Bhaskar, ADG (AAF&CC), ICAR, New Delhi; Dr. A.R. Sharma, Director (Research), RLBCAU, Jhansi; Dr. B.B. Singh, Former ADG (O&P), ICAR, New Delhi; Dr. A.K. Vasisht, Former ADG (PIM), ICAR, New Delhi; Dr. B.S. Prakash, Former ADG (AN), ICAR, New Delhi; and Dr. B.S. Dwivedi, Director, ICAR-NBSS&LUP, Nagpur were present in the meeting. In the beginning, Director, Dr. O.P. Yadav welcomed the Chairman and members of the RAC and presented the overall achievements and new initiatives of the Institute. Dr. P. Santra, Member Secretary, presented the Action Taken Report (ATR) on the recommendations of previous RAC meeting held on November 07, 2020, which was followed by presentations of research achievements by Heads of Divisions, Regional Research Stations and KVKs. The RAC committee proposed few recommendations for future research works of the institute.



One-day Awareness Program on Natural Farming was organized by Regional Research Station, Leh on February 25. During the program, a detailed presentation on Natural Farming was made. On this occasion, overview of website launched by NITI Aayog was also provided. It was stressed that traditional indigenous practices of farming reduces externally-purchased inputs and also improves the environment, soil and human health simultaneously. The



प्रतिभागियों को बीज उपचार और पौध संरक्षण विधियों के कुछ स्थानीय सूत्रीकरण के बारे में बताया गया, जो प्राकृतिक और पर्यावरण के अनुकूल हैं। इसके अलावा, पारंपरिक बीजों के संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला गया और शीत शुष्क क्षेत्र के लिए उपयुक्त पारंपरिक स्वदेशी खेती के तरीकों का अभ्यास करने की आवश्यकता बतायी गई। साथ ही, बीज भंडारण विधियों और उनके महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में नांग गाँव के सरपंच, 7 पंचों, किसान महिलाओं और किसानों सहित 37 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

फसल उत्पादन के लिए खड़ीन प्रणाली में जल उपयोग क्षमता बढ़ाने पर एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण का आयोजन क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, जैसलमेर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित संस्थान के सीड असाकोडर परियोजना के तहत 26 फरवरी को किया गया। कार्यक्रम में वर्षा जल के संरक्षण और वाष्पीकरण के नुकसान को कम करने के उपायों का सुझाव दिया गया। प्रशिक्षण में बरमसर, डेडा और बासनपीर के कुल 55 किसानों ने भाग लिया।



कृषक-वैज्ञानिक संवाद एवं तकनीकी व उपकरणों का प्रदर्शन: कृषक फर्स्ट कार्यक्रम के पशुधन आधारित मॉड्यूल में 3 मार्च को बेरु गाँव में कृषक-वैज्ञानिक संवाद एवं नई तकनीकों एवं उपकरणों पर प्रदर्शन का आयोजन किया गया। परियोजना सह-समन्वयक डॉ. ए.के. पटेल ने बताया कि पशुपालक नई तकनीकों और उपकरणों को अपनाकर और पशुपालन में आ रही समस्याओं से निजात पाकर अपनी आय बढ़ा सकते हैं। संस्थान द्वारा विकसित आहार नांद को भेड़ों के बच्चों को चारा खिलाने के लिए पशुपालकों को वितरित किया गया। इसके अतिरिक्त पशुपालन पर अन्य वैज्ञानिक जानकारी जैसे रोगरोधी टीके और संतुलित आहार आदि भी प्रदान की गई। डॉ. एन. वी. पाटिल, अध्यक्ष ने ऊँटों के रोगों, उन्हें रोकने के उपायों और ऊँटनी के दूध से बने सह-उत्पादों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में बेरु गाँव के 25 से अधिक पशुपालकों ने भाग लिया।

participants were explained some local formulations of seed treatment and plant protection methods, which are natural and eco-friendly. In addition, importance of conservation of traditional seeds was highlighted with a need for practicing traditional indigenous farming methods suitable for the cold arid region. Furthermore, seed storage methods and their importance were enlightened. The program was attended by 37 participants including Sarpanch, 7 Panchs, farm women and farmers of Nang village.

One-day Farmers Training on Increasing Water Use Efficiency in Khadin System for Crop Production was organized at Regional Research Station, Jaisalmer on February 26 under the SEED ASACODAR Project of the institute sponsored by Department of Science and Technology, New Delhi. In the program, measures to conserve the rainwater and reduce evaporation loss were suggested. A total of 55 farmers from Baramsar, Deda and Basanpeer participated in the training.



Farmer-Scientist Interaction and Demonstration of Technologies and Equipment: In livestock-based module of the Farmer's First program, Farmer-Scientist Interaction and demonstration on new technologies and equipment was held at Beru village on March 03. Project Co-Coordinator Dr. A.K. Patel told that animal rearers can increase their income by adopting new technologies and equipment and getting rid of the problems faced in animal husbandry. The feeding mangers developed by the institute were distributed to the animal rearers for feeding the lambs. Apart from this, other scientific information on animal husbandry such as anti-disease vaccines and balanced diet etc. was also provided. Dr. N.V. Patil, Head informed about the diseases of camels, the measures to prevent them, and the by-products made from camel milk. More than 25 cattle farmers of Beru village participated in the program.

प्रक्षेत्र दिवस एवं प्रदर्शन: संस्थान और नाबार्ड द्वारा वित्तपोषित परियोजना के तहत 4 मार्च को ग्राम दांतीवाड़ा में एक प्रक्षेत्र दिवस और प्रदर्शन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में किसानों को अपनी आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अन्य गतिविधियों जैसे पशुपालन, नर्सरी स्थापना और कृषि में कटाई उपरांत तकनीकों का उपयोग करके खेती में विविधता लाने का सुझाव दिया गया। किसानों को नर्सरी तैयार करने की तकनीक के बारे में भी जानकारी दी गई। नर्सरी का भ्रमण करने के बाद किसानों को अपने गाँवों में नर्सरी स्थापित करने और अच्छी गुणवत्ता वाले पौधे तैयार करने की प्रेरणा मिली, ताकि उन्हें बेचकर अतिरिक्त आय अर्जित की जा सके। कार्यक्रम में लगभग 40 किसानों ने भाग लिया।



संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण संरक्षण-जीईएफ परियोजना के तहत संस्थान में कृषि जैव विविधता संरक्षण पर क्षेत्रीय संगोष्ठी: किसानों की आजीविका सुधार और जलवायु लचीलापन के लिए कृषि जैव विविधता संरक्षण और उपयोग पर एक क्षेत्रीय संगोष्ठी का आयोजन 7 मार्च को किया गया। डॉ. एस.के. सिंह, अध्यक्ष ने सभी अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। संगोष्ठी में कई विषयों पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें फसलों का महत्व, विभिन्न पेड़, पशुधन और मरुस्थलीय पारिस्थितिकी तंत्र में सूक्ष्मजीव जैवविविधता, किसानों के पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने की आवश्यकता, एकीकृत कृषि प्रणाली का उपयोग, विभिन्न उत्पादों का मूल्यवर्धन और प्रसंस्करण, एफ.पी.ओ. की संरचना और सिद्धांत, नाबार्ड की भूमिका और विभिन्न सरकारी योजनाएं, किसानों के बीच वित्तीय साक्षरता का महत्व, आदि शामिल थे। इसके अलावा, विभिन्न प्रकार के बीज प्राप्त करने की प्रक्रिया, बीज प्रमाणीकरण प्रक्रिया और तरीके, क्षेत्र निरीक्षण, बीज परीक्षण और जैविक क्षेत्रों का प्रमाणीकरण, उत्पादों और फसलों का उनकी खेती के पारंपरिक क्षेत्रों से आगे विस्तार पर भी चर्चा की गई। संगोष्ठी में बायोवर्सिटी इंटरनेशनल नई दिल्ली, भाकृअनुप-एनबीपीजीआर नई दिल्ली, कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर, बाजरा पर एआईसीआरपी, जोधपुर, ग्रामीण विकास विज्ञान समिति, राजस्थान राज्य बीज निगम, नाबार्ड, कृषि विज्ञान केंद्र गुडामलानी, राजस्थान कृषि विभाग और यूको बैंक के अधिकारियों के साथ-साथ जोधपुर के ओसियां ब्लॉक के 35 किसान भी शामिल हुए।

Field Day and Demonstration: A Field Day and Demonstration was organized at village Dantiwada on March 04 under the institute and NABARD funded-project. In the program, farmers were advised to diversify farming by adopting other activities such as animal husbandry, nursery establishment and use of post-harvest technology in order to ensure their economic and social security. Farmers were also provided information about the nursery raising techniques. After visiting the nursery, farmers were inspired for establishing nurseries in their villages and produce and sell good-quality saplings to earn extra income. About 40 farmers participated in the program.



Regional Seminar on Agrobiodiversity Conservation under UNEP-GEF Project: A Regional Seminar on Agrobiodiversity Conservation and Use for Climate Resilience and Livelihood Improvement of Farmers was organized on March 07. Dr. S.K. Singh, Head welcomed all the guests and participants. In the seminar, deliberations on several topics were made, which included importance of crops, multiple trees, livestock and micro-organism biodiversity in the desert ecosystem, need to preserve the farmers' traditional knowledge, use of integrated farming system, value-addition and processing of different products, structure and principles of FPOs, role of NABARD and various government schemes, importance of financial literacy among farmers, etc. In addition, procedure for procuring different types of seed material, seed certification procedures and methods, field inspection, seed testing and certification of organic fields, extension of products and crops beyond their traditional areas of cultivation were also discussed. In the seminar, officials from Bioversity International New Delhi, ICAR-NBPGR New Delhi, Agricultural University Jodhpur, AICRP on Pearl millet, Jodhpur, Gramin Vikas Vigyan Samiti, Rajasthan State Seed Corporation, NABARD, KVK Gudamalani, Rajasthan Agriculture Department and UCO Bank along with 35 farmers from Osian block of Jodhpur participated.



संस्थान ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया: बेहतर कल के लिए पशुधन उत्पादन में महिलाओं की भूमिका विषय पर जोधपुर की तिनवरी तहसील के बालरवा गाँव में 8 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन शुष्क राजस्थान में प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप के माध्यम से पशुधन उत्पादन प्रणाली में सुधार परियोजना के तहत किया गया। कार्यक्रम में कृषि आय बढ़ाने में वैज्ञानिक तकनीकों को अपनाने के महत्व के साथ-साथ पशुधन क्षेत्र में कृषि महिलाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान द्वारा विकसित बहु-पोषक आहार बट्टिका कृषक महिलाओं को वितरित किये गए। कार्यक्रम में 48 कृषि महिलाओं और पशुपालकों ने भाग लिया।

काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा भी 8 मार्च को कृषि विज्ञान केंद्र के परिसर में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस एक महिला-विषय वस्तु विशेषज्ञ गोष्ठी आयोजित करके मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए जैसे न्यूट्री-प्लेटर पर विधि प्रदर्शन, विभिन्न मूल्य-वर्धित उत्पादों और प्रसंस्करण पर बातचीत, लघु प्रदर्शनी, विभिन्न प्रदर्शन इकाईयों का दौरा और मौसमी सब्जी बीज के पैकेट का वितरण। इस कार्यक्रम में 36 कृषि महिलाएं, संस्थान के 16 अधिकारियों और कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर के 7 कर्मचारी सदस्यों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, पाली में भी मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान कृषि में महिलाओं की भूमिका पर एक व्याख्यान दिया गया और पोषक उद्यान की स्थापना कर अच्छे स्वास्थ्य के लिए पोषण सुरक्षा के बारे में चर्चा की गई। साथ ही, घर के पिछवाड़े में सीमित स्थान पर पोषण-वाटिका की स्थापना, कीटनाशकों के मनुष्य द्वारा दैनिक आहार में सेवन से खतरनाक प्रभावों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करने के तरीकों, जैव-कीटनाशकों का उपयोग करके एकीकृत कीट प्रबंधन, एवं सब्जियों और फलों की जैविक खेती पर व्याख्यान दिये गए। इस आयोजन में कुल 38 कृषि महिलाओं ने भाग लिया।

Institute celebrated International Women's Day:

International Women's Day was celebrated on March 08 at Balarwa village in Tinwari tehsil of Jodhpur on the Role of Women in Livestock Production for a Better Tomorrow. The program was organized under the project Improving Livestock Production System through Technology Interventions in Arid Rajasthan. In the program, role of farm women in livestock sector was highlighted along with importance of adoption of scientific technologies in enhancing farm income. At the end of the program, multi-nutrient feed blocks developed by the institute were distributed to farm women. A total of 48 farm women and livestock rearers participated in the program.

CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur also celebrated the International Women's Day by organizing a Women-Subject Matter Specialist interface on March 08 at the KVK's premises. On this occasion, various programs such as method demonstration on nutri-platter, interaction on different value-added products and processing, small exhibition, visit of different demonstration units and distribution of seasonal vegetable seed packets were organized. A total of 36 farm women, 16 officials of the institute and 7 staff members of the KVK, Jodhpur participated in the interface program.

International Women's Day was also celebrated at CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Pali. In the program, a talk on the role of women in the agriculture was delivered and a discussion on nutritional security for good health by establishing nutri-garden was made. In addition, talks on establishing a nutri-garden in limited place at the backyard of home, hazardous effects of pesticides consumed by human through daily diets and ways to reduce pesticide use, integrated pest management using bio-pesticides, and organic cultivation of vegetables and fruits were delivered. A total of 38 farm women participated in the event.



रबी फसलों के प्रदर्शन के लिए किसान प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन:

रबी फसलों के प्रदर्शन के लिए 11 मार्च को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण संरक्षण (यूएनईपी)-जीईएफ परियोजना के तहत संस्थान में किसान प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बाड़मेर जिले के चोहटन प्रखंड के चार गाँवों की 23 कृषक महिलाओं सहित कुल 43

Farmers' Field Day for Demonstration of Rabi Crops

organized: A Farmers' Field Day was organized at the institute under United Nations Environment Protection (UNEP)-GEF project on March 11 for demonstration of rabi crops. In this program, a total of 43 farmers including 23 farm



किसानों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान भू-प्रजातियाँ और देशज जननद्रव्य के महत्व पर बल दिया गया और रबी मौसम के दौरान किसानों को उनके खेतों में आने वाली समस्याओं पर चर्चा की गई और उनके समाधान सुझाए गए। किसानों ने यूएनईपी-जीईएफ परियोजना के तहत उगाए गए जीरा और सरसों के गुणन क्षेत्र खंडों का दौरा किया। किसानों ने रबी फसल वाटिका में गहरी दिलचस्पी दिखाई और इसबगोल, जीरा, अमरंथस, चिया, क्विनोआ और सरसों की विभिन्न किस्मों के तुलनात्मक प्रदर्शन को देखा। किसानों ने 100 दिनों की अपेक्षाकृत कम परिपक्वता अवधि वाले जीरा चयन सीजेडसी-94 की सराहना की। किसानों ने पॉलीहाउस का भी दौरा किया जहाँ उन्हें टमाटर, शिमला मिर्च और पॉलीहाउस की खेती के लिए उपयुक्त अन्य फसलों के बारे में बताया गया। इसके अलावा, डॉ. दिलीप जैन, अध्यक्ष ने सौर उपकरणों और कृषि-वोल्टाइक प्रणाली के लाभों के बारे में बताया। इसके अलावा, किसानों को एकीकृत कृषि प्रणाली के घटकों के बारे में विस्तार से बताया गया, जो एक किसान को भूमि के एक टुकड़े पर बागवानी घटकों सहित कई फसलें लगाकर वर्ष भर अपनी आजीविका बनाए रखने में सक्षम बना सकता है। संस्थान के कलमी खेजड़ी प्रखंड में चार वर्ष पुराने पौधों की पुष्पन अवस्था ने किसानों का ध्यान आकर्षित किया। इसके अलावा, किसानों को मरुसेना (ट्राइकोडर्मा) की तैयारी, उपयोग की विधि और लाभों के बारे में बताया गया। किसानों ने संस्थान के मवेशी और भेड़ पालने, अजोला इकाई और पोषक आहार-बट्टिका तैयार करने वाली इकाई का भी दौरा किया।

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत स्वच्छता अभियान कार्यक्रम:

संस्थान के मरुस्थलीकरण नियंत्रण पर्यावरण सूचना प्रणाली केन्द्र द्वारा 14 मार्च को आजादी का अमृत महोत्सव के तहत जोधपुर के मेलबा गाँव में एक स्वच्छता अभियान कार्यक्रम किया गया। कार्यक्रम के दौरान मेलबा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में सरपंच के साथ-साथ ग्राम पुरुषों एवं महिलाओं एवं एनविस सदस्यों ने स्वच्छता अभियान में भाग लिया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के लिए स्वच्छता एवं पर्यावरण विषय पर एक चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें मेलबा के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय और विजय इंटरनेशनल विद्यालय, पिपरली, धवा के कुल 77 विद्यार्थियों ने भाग लिया। डॉ. जे.पी. सिंह, अध्यक्ष ने शुष्क क्षेत्र की वनस्पतियों के बारे में बताया और डॉ. पी.सी. मोहराणा, एनविस समन्वयक ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन किया।

कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल के पूर्व अध्यक्ष, डॉ. सी.डी. मायी ने 21 मार्च को श्री भागीरथ चौधरी, एपीईडीए बोर्ड सदस्य, भारत सरकार के साथ संस्थान का भ्रमण किया। निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने उन्हें जलवायु परिवर्तन और तेजी से घटते जल संसाधनों के परिदृश्य के तहत कृषि उत्पादकता में सुधार करके शुष्क क्षेत्र की खेती को लाभदायक बनाने में उभरती चुनौतियों से अवगत कराया। डॉ. मायी ने

women from four villages in Chohtan block of Barmer district participated. During the program, importance of landraces and native germplasm in agriculture was emphasized and problems being faced by farmers in their fields during the rabi season were discussed and their solutions were suggested. The farmers visited the multiplication field blocks of cumin and mustard raised under the UNEP-GEF Project. The farmers showed a keen interest in the rabi Crop Cafeteria and saw the comparative performance of different varieties of isabgol, cumin, amaranthus, chia, quinoa and mustard crops. Cumin selection CZC-94, having relatively less maturity period of 100 days, was appreciated by the farmers. The farmers also visited the polyhouse where they were explained about tomato, capsicum and other crops suitable for polyhouse cultivation. In addition, Dr. Dilip Jain, Head explained the benefits of solar devices and agri-voltaic system. Furthermore, the farmers were elaborated about the components of Integrated Farming System, which can enable a farmer to sustain his livelihood round the year by having multiple crops including horticultural components at single piece of land. The budded khejri block of the institute having four-year old plants at flowering stage attracted attention of the farmers. Moreover, the farmers were explained about preparation, method of use and benefits of Maru sena (Trichoderma). The farmers also visited the cattle and sheep pens of the institute, azolla unit, and nutrient feed-block preparation unit.

Cleanliness Drive under Azadi Ka Amrit Mahotsav:

Environmental Information System (ENVIS) on Combating Desertification of the institute conducted a Cleanliness Drive on March 14 at Melba village of Jodhpur under Azadi Ka Amrit Mahotsav. During the program, a Cleanliness Drive was performed in the premises of the Government Higher Secondary School of Melba by Sarpanch along with village men and women, and ENVIS members. On this occasion, a drawing competition on the topic of cleanliness and environment was held for the students, where a total of 77 students from the Government Higher Secondary School of Melba and Vijay International School of Piparli, Dhawa participated. Dr. J.P. Singh, Head provided information about the vegetation of the arid region and Dr. P.C. Moharana, ENVIS coordinator also interacted with the students.

Former Chairman ASRB, Dr. C.D. Mayee visited the institute on March 21 along with Sh. Bhagirath Choudhary, Board Member APEDA, Government of India. Director Dr. O.P. Yadav briefed them about the evolving challenges in making arid zone farming profitable by improving farm productivity under the scenario of climate change and fast-depleting water resources. Dr. Mayee appreciated the working models



संस्थान के कृषि खंड में स्मार्ट कृषि, कम लागत वाले पॉलीहाउस और स्वचालित आदान वितरण प्रणाली के मॉडल की सराहना की। वे एकीकृत कृषि प्रणाली, कृषि-वोल्टाईक, जल संचयन के माध्यम से वर्ष भर चारा उत्पादन, और कृषि कार्यों के लिए सौर ऊर्जा के उपयोग पर किए गए कार्यों से प्रभावित हुए। डॉ. मायी ने वैज्ञानिक जानकारी और किसान-स्तर पर कैसे-करें के बीच के अंतर को कम करके संस्थान प्रौद्योगिकियों की पहुंच में सुधार करने के सुझाव दिए। उन्होंने मिट्टी और जल के अनुचित प्रबंधन के कारण उत्पन्न होने वाले मुद्दों पर बल दिया और बदलती जलवायु को देखते हुए पॉलीहाउस में सूक्ष्म-जैविक जमाव की ध्यान से निगरानी करने की सलाह दी।



विश्व जल दिवस मरुस्थलीय नियन्त्रण पर्यावरण सूचना प्रणाली केन्द्र (एनविस), जोधपुर और एनविस हब, असम विज्ञान प्रौद्योगिकी और पर्यावरण परिषद, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, असम सरकार द्वारा 22 मार्च को संयुक्त रूप से एक वेबिनार का आयोजन करके मनाया गया। यह कार्यक्रम इस वर्ष के विषय “भू-जल : अदृश्य को दृश्यमान बनाना” पर आजादी का अमृत महोत्सव का भी एक भाग था। इस अवसर पर दो अतिथि वक्ताओं ने व्याख्यान दिए। संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. आर.के. गोयल ने ‘शुष्क पश्चिमी राजस्थान के जल संसाधन और इसकी प्रबंधन रणनीतियाँ’ पर प्रस्तुति दी। इसके अलावा, प्रोफेसर कृष्ण गोपाल भट्टाचार्य, पूर्व विभागाध्यक्ष, रसायन विज्ञान विभाग, पूर्व डीन, विज्ञान संकाय, गुवाहाटी विश्वविद्यालय ने पूर्वी भारत, विशेष रूप से गुवाहाटी क्षेत्र, पर ध्यान केंद्रित करते हुए इस वर्ष के विषय पर एक व्याख्यान दिया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन डॉ. पी.सी. मोहराणा, एनविस समन्वयक, राजस्थान और डॉ. जयदीप बरुआ, एनविस समन्वयक, असम द्वारा किया गया। वेबिनार में दोनों राज्यों के 63 वैज्ञानिकों, अधिकारियों और अन्य प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय वन दिवस और विश्व जल दिवस संयुक्त रूप से क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, लेह द्वारा 22 मार्च को केन्द्रीय विद्यालय, लेह में विद्यार्थियों और शिक्षकों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जल और वन संसाधन क्षमता, वन-जल प्रबंधन में सामाजिक भूमिका, अनंत

of smart agriculture, low-cost polyhouses, and automatic input delivery system in precision farming block of the institute. He was impressed with the work done on integrated farming systems, agri-voltaics, round-the-year fodder production through water harvesting, and use of solar energy for agricultural operations. Dr. Mayee gave suggestions to improve the reach of the institute technologies by abridging the gap between scientific “know-how” and farmers-level “to do-how”. He emphasized on the issues arising due to improper soil and water management and advised to closely monitor microbial build-up in polyhouses in view of changing climate.



World Water Day was jointly celebrated by ENVIS RP on Combating Desertification, Jodhpur and ENVIS Hub, Assam Science Technology & Environment Council, Department of Science & Technology, Government of Assam by organizing a webinar on March 22. The program was also a part of Azadi ka Amrit Mahotsav on this year's theme on “Groundwater: Making the Invisible Visible”. On this occasion, lectures were delivered by two Guest Speakers. Dr. R.K. Goyal, Principal Scientist of the institute made presentation on “Water Resources of Arid Western Rajasthan and its Management Strategies”. Further, Prof. Krishna Gopal Bhattacharyya, Former HoD, Department of Chemistry, Former Dean, Faculty of Science, Guwahati University delivered a lecture on this year theme by focusing on the eastern India specially Guwahati region. Entire program was coordinated by Dr. P.C. Moharana, ENVIS Coordinator, Rajasthan and Dr. Jaideep Baruah, ENVIS Coordinator, Assam. The webinar was attended by 63 scientists, officials and other participants from both the states.

International Day of Forest and World Water Day was jointly celebrated by Regional Research Station, Leh with students and teachers at Kendriya Vidyalaya, Leh on March 22. On this occasion, lectures on water and forest resource



संभावना के साथ संसाधन के रूप में हिमनद, और भूजल के नैतिक प्रबंधन पर व्याख्यानों के बाद विद्यार्थियों से बातचीत और एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में केन्द्रीय विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के सहायक कार्यपालक अभियंता एवं स्थात्र के कर्मचारी सदस्यों ने भाग लिया।

कृषक महिलाओं के लिए खाद्य प्रसंस्करण प्रशिक्षण आयोजित: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा प्रायोजित परियोजना, कृषि महिलाओं की आय दोगुनी करना – शुष्क क्षेत्र में खाद्य प्रसंस्करण और प्रौद्योगिकी एकीकरण के माध्यम से उद्यमिता विकास के तहत 22 से 25 मार्च के दौरान खाद्य प्रसंस्करण पर चार दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। परियोजना की मुख्य अन्वेषक और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और प्रशिक्षण विभाग की अध्यक्ष डॉ. प्रतिभा तिवारी ने बताया कि इस परियोजना का उद्देश्य महिलाओं को व्यावसायिक उद्यम स्थापित करने और चलाने में सहायता करना है। विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों द्वारा कृषक महिलाओं को करो और सीखो सिद्धांत पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। निदेशक डॉ. ओ.पी. यादव ने सफल खाद्य प्रसंस्करण व्यावसायिक उद्यम के विकास में व्यापक दृष्टिकोण की सराहना की। प्रशिक्षण के लिए कच्चे उत्पादों के साथ प्रदान की गई स्टार्ट-अप किट ने प्रतिभागियों में उत्साह और स्वतंत्र रूप से उद्यम का प्रबंधन करने की क्षमता में आत्मविश्वास उत्पन्न किया। महिलाओं को स्वयं-सहायता समूह बनाने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

पशु स्वास्थ्य शिविर: काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा 23 मार्च को जोधपुर के भोपालगढ़ पंचायत समिति के ग्राम लावड़ी में पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। पशु स्वास्थ्य शिविर का मुख्य उद्देश्य विभिन्न रोगों से पीड़ित पशुओं का उपचार करना था। शिविर में कुल 8 पशु मालिकों ने अपने पशुओं के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए भाग लिया। कुल 260 भेड़ और बकरियों का विभिन्न रोगों के लिए इलाज किया गया।

प्राकृतिक खेती पर जागरूकता कार्यक्रम काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा 23 मार्च को जोधपुर जिले की धवा पंचायत समिति के राबड़िया गाँव में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक खेती के उपयोग के बारे में जागरूक करना था। किसानों को प्राकृतिक और जैविक खेती के महत्व के बारे में बताया गया। कार्यक्रम में 35 किसानों ने भाग लिया।

आदान विक्रेताओं के लिए कृषि विस्तार सेवाओं में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डीईएसआई) तीसरे बैच के लिए काजरी-कृषि विज्ञान केंद्र, जोधपुर द्वारा 25 मार्च को शुरू किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, उप निदेशक बागवानी श्री जयनारायण स्वामी ने उर्वरक बीज विक्रेताओं को डिप्लोमा पाठ्यक्रम के दौरान

potential, societal role in managing forest-water, glaciers as resources with infinite possibility, and ethical management of groundwater were delivered followed by students' interaction and holding a quiz competition. The winners of the quiz competition were awarded with prizes. In the program, Principal and teachers of Kendriya Vidyalaya, Assistant Executive Engineer of Public Health Engineering Department, and staff members of the station participated.

Food Processing Training for Women Farmers: Four-day Training on Food Processing was organized during March 22-25 in DST-sponsored project on Doubling Farm Women's Income: Entrepreneurship Development through Post-harvest Processing and Technology Integration in Arid Zone. Dr. Pratibha Tewari, Principal Investigator of the project and Head, Transfer of Technology and Training Division, explained that project aims to nurture business enterprise on food processing by women. The training was imparted on learning by doing principle by experts of various disciplines. Director Dr. O.P. Yadav appreciated the comprehensive approach in developing successful food processing enterprise. The start-up kit along with raw products for hands-on-practice generated enthusiasm in participants amongst women and confidence in their ability to manage the enterprise independently. Participants were encouraged to form Self-Help Groups.

Animal Health Camp: CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur organized Animal Health Camp on March 23 at village Lawari in Bhopalgarh Panchayat Samiti of Jodhpur. The main objective of the Animal Health Camp was to treat the animals suffering from different diseases. In the camp, a total of 8 animal owners participated for health check-up of their animals. A total of 260 sheep and goats were treated for different diseases.

Awareness program on Natural Farming was organized by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur on March 23 at Rabdiya village in Dhawa Panchayat Samiti of Jodhpur district. The main objective of the program was to make the farmers aware of use of Natural Farming. Farmers were educated about the importance of natural and organic farming. A total of 35 farmers participated in the program.

One-year Diploma course in Agricultural Extension Services for Input Dealers (DAESI) for 3rd batch was started by CAZRI-Krishi Vigyan Kendra, Jodhpur on March 25. The Chief Guest of the program, Deputy Director Horticulture Shri Jayanarayan Swamy called upon the fertilizer seed



अर्जित ज्ञान के माध्यम से किसानों को उचित मार्गदर्शन देने का आह्वान किया, ताकि किसानों के खेतों में फसल उत्पादन में वृद्धि हो और जैविक उत्पाद भी लिए जा सकें। केवीके अध्यक्ष, डॉ. बी.एस. राठौड़ ने प्रशिक्षुओं से आग्रह किया कि वे इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम से सीखे गये उन्नत कौशल के साथ किसानों की अधिक से अधिक मदद करें। पाठ्यक्रम के सहजकर्ता श्री नरेन्द्र सिंह परिहार ने प्रशिक्षुओं को एक वर्ष के दौरान चलाए जाने वाले कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराया। इस पाठ्यक्रम में कुल 40 प्रशिक्षु लाभान्वित होंगे।



थोर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन क्षेत्रीय अनुसंधान स्थात्र, कुकमा-भुज में 25 मार्च को आईसीएआरडीए-वित्तपोषित थोर परियोजना के तहत किया गया। इसका उद्देश्य वैकल्पिक चारा संसाधन के रूप में थोर के कृषिकरण के बारे में किसानों को जागरूक और प्रशिक्षित करना था। कार्यक्रम में थोर के कृषिकरण पर व्यावहारिक प्रशिक्षण सत्र के साथ-साथ चारे के संसाधन के रूप में काँटा-रहित थोर के महत्व पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में कुल 35 किसानों ने भाग लिया।

vendors to give proper guidance to the farmers through the knowledge acquired during the diploma course, in order to increase crop production in farmers' fields and also to produce organic products. Head KVK, Dr. B.S. Rathore urged the trainees to help the farmers more and more with the enhanced skills, they will learn from this diploma course. Shri Narendra Singh Parihar, the facilitator of the course, apprised the trainees about the outline of the program to be run during one year. A total of 40 trainees will be benefited in this course.

Cactus Field Day was organized under ICARDA-funded Cactus Project at Regional Research Station, Kukma-Bhuj on March 25. The objective was to create awareness and train the farmers about cultivation of cactus as an alternate fodder resource. In the program, importance of spineless cactus as fodder resource was highlighted along with hands-on training session on cactus cultivation. A total of 35 farmers participated in the program.



आगन्तुक

19 जनवरी: श्री वी.के. पांडे, संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग, राजस्थान सरकार

4 फरवरी: श्री एम.एस. राठौड़, महानिरीक्षक, सीमा सुरक्षा बल, जोधपुर

6 फरवरी: श्री राजेश शर्मा, संभागीय आयुक्त, जोधपुर

13 फरवरी: डॉ. इंद्रजीत यादव, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जोधपुर विकास प्राधिकरण, जोधपुर

Visitors

January 19: Shri V.K. Pandey, Joint Director, Department of Agriculture, Government of Rajasthan

February 4: Shri M.S. Rathore, Inspector General, Border Security Force, Jodhpur

February 6: Shri Rajesh Sharma, Divisional Commissioner, Jodhpur

February 13: Dr. Indrajeet Yadav, Chief Executive Officer, Jodhpur Development Authority, Jodhpur



14 फरवरी: श्री हिमांशु गुप्ता, जिला कलेक्टर, जोधपुर

15 फरवरी: डॉ. ए.एस. फरोदा, पूर्व अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल एवं डॉ. ओ.पी. पारीक, पूर्व निदेशक, सीआईएएच, बीकानेर

16 फरवरी: श्री एम.आर. बालोच, निदेशक, आफरी, जोधपुर

18 फरवरी: सुश्री ज्योति ज्यानी, सदस्य आईएमसी

17 मार्च: सुश्री वनिता सेठ, महापौर (दक्षिण), नगर निगम, जोधपुर

21 मार्च: डॉ. सी.डी. मायी, पूर्व अध्यक्ष, कृषि वैज्ञानिक चयन मंडल एवं श्री भागीरथ चौधरी, बोर्ड सदस्य एपीईडीए, भारत सरकार

February 14: Shri Himanshu Gupta, District Collector, Jodhpur

February 15: Dr. A.S. Faroda, Former Director, CAZRI, Jodhpur and Dr. O.P. Pareek, Former Director, CIAH, Bikaner

February 16: Shri M.R. Baloch, Director, AFRI, Jodhpur

February 18: Ms. Jyoti Jaani, Member IMC

March 17: Ms. Vanita Seth, Mayor (South), Nagar Nigam, Jodhpur

March 21: Dr. C.D. Mayee, Former Chairman, ASRB and Sh. Bhagirath Choudhary, Board Member APEDA, Government of India

नियुक्ति

- श्री सुरेश कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीनियर ग्रेड) 19 मार्च 2022 से भाकृअनुप-काजरी, जोधपुर में

Appointment

- Sh. Suresh Kumar, Chief Administrative Officer (Sr. Grade) on March 19, 2022

पदोन्नति

- श्रीमती सुनीता आर्य, मुख्य वित्त एवं लेखा अधिकारी से निदेशक (वित्त) 5 मार्च 2022 से
- श्री सुभाष चंद्रा, एसएसएस से जूनियर क्लर्क 11 जनवरी 2022 से
- श्री प्रेम सिंह, एसएसएस से जूनियर क्लर्क 11 जनवरी 2022 से

Promotion

- Smt. Sunita Arya from Chief Finance & Account Officer to Director (Finance) w.e.f. March 05, 2022
- Sh. Subhash Chandra from SSS to Jr. Clerk w.e.f. January 11, 2022
- Sh. Prem Singh from SSS to Jr. Clerk w.e.f. January 11, 2022

सेवानिवृत्ति

जनवरी

- डॉ. (श्रीमती) अंजली पंचोली, प्रधान वैज्ञानिक; श्री नर सिंह राम, टी-5; श्री बरकत अली, एसएसएस; श्री भेरा राम/श्री खुमा राम, एसएसएस; श्रीमती सुआ, एसएसएस; श्रीमती बाबुरी, एसएसएस

फरवरी

- श्री गोपी किशन, टी-4; श्री केर सिंह, एसएसएस; श्री सोना राम/तेजा राम, एसएसएस

मार्च

- श्री सोहन लाल गहलोत, टी-1; श्री नर सिंह, एसएसएस; श्री पोकर राम, एसएसएस

Retirements

January

- Dr. (Mrs.) Anjly Pancholy, Principal Scientist; Sh. Nar Singh Ram, T-5; Sh. Barakat Ali, SSS; Sh. Bhera Ram/Sh. Khuma Ram, SSS; Smt. Sua, SSS; Smt. Baburi, SSS

February

- Sh. Gopi Kishan, T-4; Sh. Ker Singh, SSS; Sh. Sona Ram/Teja Ram, SSS

March

- Sh. Sohan Lal Gehlot, T-1; Sh. Nar Singh, SSS; Sh. Pokar Ram, SSS

प्रकाशक	: निदेशक, केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर
दूरभाष	: +91-291-2786584
फैक्स	: +91-291-2788706
ई-मेल	: director.cazri@icar.gov.in
वेबसाइट	: http://www.cazri.res.in
संकलन एवं सम्पादन	: दीपेश माचीवाल, जे.पी. सिंह, निशा पटेल एवं श्री बल्लभ शर्मा

Published by	: Director, Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur
Phone	: +91-291-2786584
Fax	: +91-291-2788706
E-mail	: director.cazri@icar.gov.in
Website	: http://www.cazri.res.in
Compiled & edited by	: Deepesh Machiwal, J.P. Singh, Nisha Patel and Shree Ballabha Sharma

भाकृअनुप-केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

(आई.एस.ओ. 9001 : 2015)

ICAR-Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur

(ISO 9001 : 2015)



CAZRI[®]
Enhancing resilience of arid lands